ब्रिटिश सरकार द्वारा
जब्तशुदा कृति

सोज़े वतन

मुंशी प्रेमचन्द

सोज़े-वतन

लेखकः
—मुंशी प्रेमचन्द

सुकीर्ति प्रकाशन
डी. सी. निवास के सामने, करनाल रोड़,
कैथल.136027 (हरियाणा)

❑ पुस्तक : सोज़े–वतन

❑ लेखक : मुंशी प्रेम चन्द

❑ संस्करण : 2002

❑ मूल्य : 22/- (बाईस रुपये मात्र)

❑ प्रकाशक : सुकीर्ति प्रकाशन,
डी. सी. निवास के सामने,
करनाल रोड़,
कैथल-136027 (हरियाणा)
फोन 01746-25862

❑ मुद्रक : सुकीर्ति प्रिंटर्ज,
करनाल रोड़, कैथल

सोज़े-वतन

চিঠি-পত্রি

बिटिश सरकार द्वारा जब्तशुदा कृति

सोज़े-वतन

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द को जन्म
देने वाली ऐतिहासिक कृति

मुंशी प्रेमचन्द

सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल
(हरियाणा)

अन्तर्वस्तु

क्रम पृष्ठ	विषय	
1.	हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक दस्तावेज़	3
2.	भूमिका–मुंशी प्रेमचन्द	5

कहानियां

1.	दुनियां का सबसे अनमोल रतन	9
2.	शेख मखमूर	18
3.	यही मेरा वतन है	34
4.	शोक का पुरस्कार	40
5.	सांसारिक–प्रेम और देश–प्रेम	50

हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक दस्तावेज

सोज़े–वतन अर्थात देश का दर्द

सोज़े–वतन का एक तरह से अर्थ है देश का दर्द। और यह प्रेमचन्द के हृदय में इतना गहरा उतर चुका था कि तमाम उम्र यह अक्श उनके दिल में कभी हल्का नहीं हुआ। सोज़े–वतन में कुल पांच कहानियां संकलित है जिसमें चार हिन्दी के लिए बिल्कुल नयी थी ;शेख मखमुर, यही मेरा वतन है, शोक का पुरस्कार, सांसारिक प्रेम और देश प्रेम। लेकिन पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन हिन्दी में छप चुकी थी और बहुत ख्याति अर्जित कर चुकी थी ।

सोज़े–वतन कथा–संग्रह का हिन्दी साहित्य सदैव ऋणी रहेगा क्योंकि यदि यह संग्रह ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त न किया जाता, इसकी प्रतियां नहीं जलाई जाती तो सम्भवत उर्दू तो 'नवाब राय' को पाकर कृतार्थ रहती किन्तु प्रेमचन्द का जन्म नहीं हो पाता और हिन्दी ऐसे सम्पन्न साहित्य और यशस्वी लेखनी से अछूती रह जाती ।

सरकारी नौकरी करते हुए मुंशी जी उर्दू में नवाबराय के नाम से

कहानियां लिखते थे; यद्यपि उनके पिता का दिया हुआ नाम 'धनपतराय' था किन्तु दुलार में ताऊ इनको 'नवाब' कहा करते थे–यही कारण है कि वे इसी नाम को पत्र व्यवहार और लेखन में काम लाते थे ।

प्रेमचन्द जी ने 1907 में अपना पहला कहानी संग्रह जिसमें पांच कहानियां संग्रहित थी उर्दू में 'सोज़े–वतन' के नाम से प्रकाशित करवाया जिसमें स्वदेश प्रेम की महिमा अंकित की गई थी । यद्यपि इन कहानियों में आपत्तिजनक कोई बात नहीं थी और रघुपतिसहाय 'फिराक' ने तो इनको पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का मत भी व्यक्त किया था ।

उप जिलाधीश को इन कहानियों में ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्रोह की गंध आई–उन्होंने खुफिया पुलिस को इसकी तलाश करने की आज्ञा दी । खुफिया पुलिस ने सुराग पा लिया कि आखिर 'नवाबराय' है कौन ? हम्मीरपुर के कलेक्टर ने फौरन मुंशी जी को तलब किया और मुंशी जी रातों रात बैलगाड़ी पर सवार होकर 'कुल–पहाड' पहुंचे जो हम्मीरपुर की एक तहसील थी और जहां उन दिनों कलेक्टर साहब का कयाम था ।

यद्यपि यह सब कहानियां ऊर्दू के मासिक पत्र 'जमाना' में छप चुकी थी और विषय की दृष्टि से वे क्रान्तिकारी भी नहीं थी –किन्तु भयभीत नौकरशाही का ध्यान उनकी और चला ही गया ।

जिला कलेक्टर ने ऐसी कहानियां लिखने के लिए उनसे जवाब–तलब किया । सरकारी छानबीन पक्की थी और अपना जुर्म इकबाल करने के अलावा मुंशी जी के पास कोई चारा भी नहीं था । लगभग 500 पुस्तकें कलेक्टर की आज्ञा से जनता के सामने जला दी गई और युवा लेखक को कड़ी चेतावनी दी गई ।

कलेक्टर ने कड़ी चेतावनी देते हुए कहा–'खैर मनाओ कि अंग्रेज अमलदारी में हो, सल्तनत मुगलिया का जमाना नहीं है, वर्ना तुम्हारे हाथ काट लिए जाते, तुम बगावत फैला रहे हो ....।'

यह बात प्रेमचन्द के मर्म पर चोट करने वाली थी, परन्तु वे असहाय थे–इस घटना ने उनके हृदय में ऐसा घाव कर दिया जो समय पाकर भर तो गया–किन्तु इसका निशान जीवन पर्यन्त बना रहा । तब

'नवाबराय' मर गया और बाजार को अपनी कहानियों से पाटने के लिए 'प्रेमचन्द' का जन्म हुआ–जिसका अर्थ था भारत के उज्ज्वल अतीत के प्रति प्रेम उत्पन्न करना । सन् 1914 में उन्होंने ऊर्दू को छोड़कर स्वतंत्र रूप से हिन्दी में लिखना प्रारम्भ कर दिया ।

उस घटना के समय नवाबराय ने अपने मन को आश्वस्त करना चाहा –'चलो सस्ते में छूटे मांडले जेल की हवा तो नहीं खानी पड़ी ।'

उनको जिलाधीश ने यह भी आदेश दिया था–'आगे से अपनी कोई भी रचना छपवाने से पहले मुझे दिखा लिया करें ।' प्रेमचन्द जी की इस दशा में क्या मनःस्थिति रही होगी, उनके इस कथन से पता लग जाता है– 'यह तो लेखन मेरे रोज का धन्धा ठहरा । हर माह एक मजमून साहब की खिदमत में पहुंचेगा तो वे समझेंगे मैं अपनी सरकारी नौकरी के काम में ख्यानत कर रहा हूं वे मुझ पर काम का और बोझ डालेंगे, इसलिए नवाबराय मरहूम हुए उनके जांनशीन कोई और साहब होंगे ।

उनके पिता द्वारा रखा गया नाम 'धनपतराय' उनकी फटेहाल जिन्दगी से किसी तरह मेल नहीं खाता था–तो उनके रियासतहीन 'नवाबराय' नाम को त्यागने के लिए सरकार ने मज़बूर कर दिया था । उन्होंने मुंशी दयानारायण निगम के सुझाव पर 'प्रेमचन्द' के नाम से लिखना प्रारम्भ किया जो उनके लिए कितना शुभ प्रमाणित हुआ यह सर्वविदित है ।

भूमिका

—मुंशी प्रेमचन्द—

हरेक कौम का इल्म–ओ–अदब अपने जमाने की सच्ची तस्वीर होता है । जो ख़्यालात कौम के दिमागों को मतहर्रिक (सक्रिय) करते हैं और जो जज़्बात कौम के दिलों में गूंजते है, वो नज्म–ओ–नस्त (गद्य–पद्य) के सफों में ऐसी सफाई से नज़र आते है जैसे आईने में सूरत । हमारे लिट्रेचर का इब्तिदाई दौर वो था कि लोग ग़फलत के नशे में मतवाले हो रहे थे । इस जमाने की अदबी यादगार बजुज़ (अलावा) आशिक़ाना ग़जलों और चन्द फदहास किस्मों (अश्लील कहानियों) के और कुछ नहीं । दूसरा दौर उसे समझना चाहिए जब कौम के नये और पुराने ख़्यालात में जिन्दगी और मौत की लड़ाई शुरू हुई और इस्लाहेतमददुन ;(सांस्कृतिक सुधार) की तजवीजें सोची जाने लगी । इस जमाने के क़सम–व–हिकायत (क़िस्से तथा कहानी) ज्यादातर इस्लाह (सुधर) और तज्दीद (नवीनता) ही का पहलू लिये हुए है । अब हिन्दुस्तान के क़ौमी ख़्याल ने बलोग़ीयत (बालिग़पन, बुद्धिमत्ता) के जीने पर एक कदम और बढ़ाया है और हुब्बे–वतन के ज़ज्बात लोगों के दिलों में उभरने लगे है । क्यूंकर मुमकिन था कि इसका असर अदब पर न पड़ता ? ये चन्द कहानियां इसी असर का आग़ाज (प्रारम्भ) है और यकीन है कि जूं–जूं हमारे ख़्याल वसीह (विस्तृत) होते जायेंगे, इसी रंग के लिट्रेचर को रोज़–अफ़ज़ों (प्रतिदिन बढ़ना) फरोग़ (उन्नत) होता जायेगा । हमारे मुल्क़ को ऐसी किताबों की अशद (सख्त) जरूरत है, जो नयी नस्ल के जिगर पर हुब्बे–वतन (देश–प्रेम) की अज़मत (महिमा) का नक्शा जमायें ।

—नवाबराय

दुनिया का सबसे अनमोल रतन

दिलफ़िगार एक कंटीले पेड़ के नीचे दामन चाक किये बैठा हुआ खून के आंसू बहा रहा था। वह सौंदर्य की देवी यानी मलका दिलफ़िरेब का सच्चा और जान देनेवाला प्रमी था। उन प्रेमियों में नहीं, जो इत्रफुलेल में बस कर और शानदार कपड़ों में सजकर आशिक के वेश में माशूक़ियत का दम भरते है। बल्कि उन सीधे–सादे भोले–भाले फ़िदाईयों में जो जंगल और पहाड़ों से सर टकराते है और फ़रियाद मचाते फिरते हैं। दिलफ़िरेब ने उससे कहा था कि अगर तू मेरा सच्चा प्रेमी है, तो जा और दुनिया की सबसे अनमोल चीज लेकर मेरे दरबार में आ। तब मैं तुझे अपनी गुलामी

में कबूल करूंगी। अगर तुझे वह चीज न मिले तो खबरदार इधर रूख न करना, वर्ना सूली पर खिचवा दूंगी। दिलफ़िगार को अपनी भावनाओं के प्रदर्शन का, शिकवे–शिकायत का, प्रेमिका के सौंदर्य–दर्शन का तनिक भी अवसर न दिया गया। दिलफ़िरेब ने ज्योंहि यह फैसला सुनाया, उसके चोबदारों ने गरीब दिलफ़िगार को धक्के देकर बाहर निकाल दिया। और आज तीन दिन से यह आफत का मारा आदमी उसी कंटीले पेड़ के नीचे उसी भयानक मैदान में बैठा हुआ सोच रहा है कि क्या करूं । दुनिया की सबसे अनमोल चीज मुझको मिलेगी ? नामुमकिन ! और वह है क्या ? कारूं का खजाना ? आबे हयात ? खुसरों का ताज ? जामे–जम तख्ते–ताऊस ? परवेज की दौलत ? नहीं, यह चीजें हरगिज नहीं। दुनिया में जरूर इनसे भी महंगी, इनसे भी अनमोल चीजें मौजूद है मगर वह क्या है। कहां है ? कैसे मिलेगी ? या खुदा, मेरी मुश्किल क्योंकर आसान होगी ?

दिलफ़िगार इन्हीं ख्यालों में चक्कर खा रहा था और अक्ल कुछ काम न करती थी। मुनीर शामी को हातिम–सा मददगार मिल गया। ऐ काश! कोई मेरी भी मददगार हो जाता, ऐ काश! मुझे भी उस चीज का जो दुनिया की सबसे बेशकीमत चीज है, नाम बतला दिया जाता ! बला से वह चीज हाथ न आती मगर मुझे इतना मालूम हो जाता कि वह किस किस्म की चीज है। मैं घड़े बराबर मोती की खोज में जा सकता हूं। मैं समुन्दर का गीत, पत्थर का दिल, मौत की आवाज और इनसे भी ज्यादा बेनिशान चीजों की तलाश में कमर कस सकता हूं। मगर दुनिया की सबसे अनमोल चीज ! यह मेरी कल्पना की उड़ान से बहुत ऊपर है।

आसमान पर तारे निकल आये थे। दिलफ़िगार यकायक खुदा का नाम लेकर उठा और एक तरफ को चल खड़ा हुआ। भूखा–प्यासा, नंगे बदन, थकन से चूर, वह बरसों वीरानों और आबादियों की खाक छानता फिरा, तलवे कांटों से छलनी हो गये, शरीर में हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देने लगी। मगर वह चीज जो दुनिया की सबसे बेश–क़ीमती चीज थी, न मिली और न उसका कुछ निशान मिला।

एक रोज वह भूलता–भटकता एक मैदान में जा निकला, जहां हजारों आदमी गोल बांधे खड़े थे। बीच में कई अमामे और चोगेवाले दढ़ियल काजी अफ़सरी शान से बैठे हुए आपस में कुछ सलाह–मशविरा कर रहे थे और इस जमात से जरा दूरी पर एक सूली खड़ी थी।

दिलफ़िगार कुछ तो कमजोरी की वजह से और कुछ यहां की कैफियत देखने के इरादे से ठिठक गया। क्या देखता है कि कई लोग नंगी तलवारें लिए एक कैदी को जिसके हाथ–पैर में जंजीरे थीं। पकड़े चले आ रहे है। सूली के पास पहुंचकर सब सिपाही रूक गये और कैदी की हथकड़ियां, बेड़ियां सब उतार ली गयी। इस अभागे आदमी का दामन सैकड़ों बेगुनाहों के खून के छींटों से रंगीन था, और उनका दिल नेकी के ख्यालों और रहम की आवाज से जरा भी परिचित न था। उसे काला चोर कहते थे। सिपाहियों ने उसे सूली के तख्ते पर खड़ा कर दिया, मौत की फांसी उसकी गर्दन में डाल दी और जल्लादों ने तख्ता खीचनें का इरादा किया कि वह अभागा मुजरिम चीखकर बोला–खुदा के वास्ते मुझे एक पल के लिए फांसी से उतार दो ताकि अपने दिल की आखिरी आरजू निकाल लूं। यह सुनते ही चारों तरफ सन्नाटा छा गया। लोग अचम्भे में आकर ताकने लगे। क़ाजियों ने एक मरने वाले आदमी की अंतिम याचना को रद्द करना उचित न समझा और बदनसीब पापी काला चोर जरा देर के लिए फांसी से उतार लिया गया ।

इसी भीड़ में एक खूबसूरत भोला–भाला लड़का एक छड़ी पर सवार होकर अपने पैरों पर उछल–उछल फ़र्ज़ी घोड़ा दौड़ा रहा था और अपनी सादगी की दुनिया में ऐसा मगन था कि जैसे वह इस वक्त सचमुच किसी अरबी घोड़े का शहसवार है। उसका चेहरा उस सच्ची खुशी से कमल की तरह खिला हुआ था जो चन्द दिनों के लिए बचपन ही में हासिल होती है और जिसकी याद हमको मरते दम तक नहीं भूलती। उसका दिल अभी तक पाप की गर्द और धूल से अछूता था और मासूमियत उसे अपनी गोद में खिला रही थी।

बदनसीब काला चोर फांसी से उतरा। हज़ारों आंखें उस पर गड़ी हुई थीं। वह उस लड़के के पास आया उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगा। उसे इस वक्त वह ज़माना याद आया जब वह खुद ऐसा ही भोला–भाला ऐसा ही खुश–व–खुर्रम और दुनिया की गंदगियों से ऐसा ही पाक साफ़ था। मां गोदियों में खिलाती थी, बाप बलाएं लेता था और सारा कुनबा जान न्योछावर करता था। आह! काले चोर के दिल पर इस वक्त बीते हुए दिनों की याद का इतना असर हुआ कि उसकी आंखों से, जिन्होंने दम तोड़ती हुए लाशों को तड़पते देखा और न झपकीं, आंसू का एक क़तरा टपक पड़ा। दिलफ़िगार ने लपककर उस अनमोल मोती को

हाथ में ले लिया और उसके दिल ने कहा– बेशक दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है जिस पर तख्ते ताऊस और जामेजम और आबे हयात और ज़रे परवेज़ सब न्योछावर हैं ।

इस ख़्याल से खुश होता कामयाबी की उम्मीद में सरमस्त, दिल–फ़िगार अपनी माशूका दिलफ़रेब के शहर मीनोसवाद को चला। मगर ज्यों–ज्यों मंज़िले तय होती जाती थीं उसका दिल बैठा जाता था कि कहीं उस चीज़ की, जिसे मैं दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ समझता हूं, दिलफ़रेब की आंखों में क़द्र न हुई तो मैं फांसी पर चढ़ा दिया जाऊंगा और इस दुनियां से नामुराद जाऊंगा। लेकिन जो हो सो हो, अब तो क़िस्मत–आज़माई है। आख़िरकार पहाड़ और दरिया तय करते शहर मानोसवाद में आ पहुंचा और दिलफ़रेब की ड्योढ़ी पर जाकर विनती की कि थकान टूटा हुआ दिलफ़िगार खुदा के फ़जल से हुक्म की तामील करके आया है, और आपके क़दम चूमना चाहता है। दिलफ़रेब ने फ़ौरन अपने सामने बुला भेजा और एक सुनहरे परदे की ओट से फ़रमाइश की कि वह अनमोल चीज़ पेश करो। दिलफ़िगार ने आशा और भय की एक विचित्र मनःस्थिति मे वह बूंद पेश की और उसकी सारी कैफ़ियत बहुत पुरअसर लफ़्ज़ों में बयान की। दिलफ़रेब ने पूरी कहानी बहुत ग़ौर से सुनी और वह भेंट हाथ में लेकर जरा देर तक ग़ौर करने के बाद बोली– दिलफ़िगार, बेशक तूने दुनिया की एक बेशक़ीमत चीज़ ढूंढ़ निकाली, तेरी हिम्मत और तेरी सूझबूझ की दाद देती हूं ! मगर यह दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ नहीं, इसलिए तू यहां से जा और फिर कोशिश कर, शायद अब कि तेरे हाथ वह मोती लगे और तेरी क़िस्मत में मेरी गुलामी लिखी हो। जैसा कि मैंने पहले ही बतला दिया था मैं तुझे फांसी पर चढ़वा सकती हूं मगर मैं तेरी जां बख्शी करती हूं इसलिए कि तुझमें वह गुण मौजूद हैं, जो मैं अपने प्रेमी में देखना चाहती हूं और मुझे यक़ीन है कि तू जरूर कभी–न–कभी कामयाब होगा।

नाकाम और नामुराद दिलफ़िगार इस माशुक़ाना इनायत से जरा दिलेर होकर बोला–ऐ दिल की रानी, बड़ी मुद्दत के बाद तेरी ड्योढ़ी पर सजदा करना नसीब होता है। फिर खुदा जाने ऐसे दिन कब आयेंगे, क्या तू अपने जान देने वाले आशिक़ के बुरे हाल पर तरस न खायेगी और क्या अपने रूप की एक झलक दिखाकर इस जलते हुए दिलफ़िगार की आनेवाली सख़्तियों के झेलने की ताक़त न देगी ? तेरी एक मस्त निगाह के नशे से चूर होकर मैं वह कर सकता हूं जो आज तक किसी से न बन

पड़ा हो ।

दिलफ़रेब आशिक़ की यह चाव–भरी बातें सुनकर गुस्सा हो गयी और हुक्म दिया कि इस दीवाने को खड़े–खड़े दरबार से निकाल दो। चोबदार ने फ़ौरन ग़रीब दिलफ़िगार को धक्के देकर यार के कूचे से बाहर निकाल दिया।

कुछ देर तक तो दिलफ़िगार अपनी निष्ठुर प्रेमिका की इस कठोरता पर आंसू बहाता रहा, और सोचने लगा कि अब कहां जाऊं ? मुद्दतों रास्ते नापने और जंगलो में भटकने के बाद आंसू की यह बूंद मिली थी, अब ऐसी कौन–सी चीज है जिसकी क़ीमत इस आबदार मोती से ज्यादा हो। हज़रते ख़िज्र ! तुमने सिकन्दर को आबेहयात के कुएं का रास्ता दिखाया था, क्या मेरी बांह न पकड़ोगे ? सिकन्दर सारी दुनिया का मालिक था। मैं तो एक बेघरबार मुसाफ़िर हूं। तुमने कितनी ही डूबती किश्तियां किनारे लगायी हैं, मुझ ग़रीब का बेड़ा भी पार करो। ऐ आलीमुक़ाम जिबरील ! कुछ तुम्हीं इस नीमजान, दुखी आशिक़ पर तरस खाओ। तुम खुदा के एक के ख़ास दरबारी हो, क्या मेरी मुश्किल आसान न करोगे ! ग़रज यह कि दिलफ़िगार ने बहुत फ़रीयाद मचायी मगर उसका हाथ पकड़ने के लिए कोई सामने न आया। आखिर निराश होकर वह पागलों की तरह दुबारा एक तरफ़ को चल खड़ा हुआ ।

दिलफ़िगार ने पूरब से पच्छिम तक और उत्तर से दक्खिन तक कितने ही जंगलों और वीरानों की ख़ाक छानी, कभी बर्फ़िस्तानी चोटियों पर सोया, कभी डरावनी घाटियों में भटकता फिरा मगर जिस चीज़ की धुन थी न वह मिली, यहां तक कि उसका शरीर हड्डियों का एक ढांचा रह गया।

एक रोज वह शाम के वक्त किसी नदी के किनारे खस्ताहाल पड़ा हुआ था। बेखुदी के नशे से चौंका तो क्या देखता है कि चन्दन की एक चिता बनी हुई है और उस पर एक युवती सुहाग के जोड़े पहने सोलहो सिंगार किये बैठी हुई है। उसकी जांघ पर उसके प्यारे पति का सर है। हज़ारों आदमी ग़ोल बांधे खड़े हैं और फूलों की बरखा कर रहे है। यकायक चिता में से खुद–ब–खुद एक लपट उठी । सती का चेहरा उस वक्त एक पवित्र भाव से आलोकित हो रहा था चिता की पवित्र लपटें उसके गले से लिपट गयीं और दम–के–दम में वह फूल–सा शरीर राख का ढेर हो गया। प्रेमिका ने अपने को प्रेमी पर न्यौछावर कर दिया और दो प्रेमियों के सच्चे, पवित्र, अमर प्रेम की अन्तिम लीला आंख से ओझल

हो गयी। जब सब लोग अपने घरों को लौटे तो दिलफ़िगार चुपके से उठा और अपने चाक–दामन कुरते में यह राख का ढेर समेट लिया और इस मुट्ठी भर राख को दुनिया की अनमोल चीज़ समझता हुआ, सफलता के नशे में चूर, यार के कूचे की तरफ़ चला। अबकी ज्यों–ज्यों वह अपनी मंजिल के क़रीब आता था, उसकी हिम्मतें बढ़ती जाती थीं। कोई उसके दिल में बैठा हुआ कह रहा था–अबकी तेरी जीत है और इस ख़्याल ने उसके दिल को जो–जो सपने दिखाये उनकी चर्चा व्यर्थ है। आख़िरकार वह शहर मीनोसवाद में दाख़िल हुआ और दिलफ़रेब की ऊंची ड्योढ़ी पर जाकर खबर दी कि दिलफ़िगार सुर्ख–रू होकर लौटा है, और हुजूर के सामने आना चाहता है । दिलफेरब ने जांबाज आशिक को फ़ौरन दरबार में बुलाया और उस चीज़ के लिए, जो दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ थी, हाथ फैला दिया। दिलफ़िगार ने हिम्मत करके चांदी जैसी कलाई को चूम लिया और मुट्ठी भर राख को उसकी हथेली में रखकर सारी कैफ़ियत दिल को पिघला देनेवाले लफ्जों में कह सुनाई और अपनी सुन्दर प्रेमिका के होठों से अपनी क़िस्मत का मुबारक फ़ैसला सुनने के लिए इन्तजार करने लगा। दिलफ़ेरब ने उस मुट्ठी भर राख को आंखों से लगा लिया और कुछ देर तक विचारों के सागर में डूबे रहने के बाद बोली– ऐ जान निछावर करनेवाले आशिक़ दिलफ़िगार ! बेशक यह राख जो तू लाया है, जिसमें लोहे को सोना कर देने की सिफ़त है, दुनिया की बहुत बेशक़ीमत चीज़ है और मै सच्चे दिल से तेरी एहसानमन्द हूं कि तूने ऐसी अनमोल भेंट मुझे दी। मगर दुनिया में इससे भी ज्यादा अनमोल कोई चीज़ है, जा उसे तलाश कर और तब मेरे पास आ। मैं तहेदिल से दुआ करती हूं कि खुदा तुझे कामयाब करे। यह कहकर वह सुनहरे परदे से बाहर आयी और माशूक़ाना अदा से अपने रूप का जलवा दिखाकर फिर नज़रों से ओझल हो गयी। एक बिजली थी कि कौंधी और फिर बादलों के परदे में छिप गयी। अभी दिलफ़िगार के होश–हवास ठिकाने पर न आने पाये थे कि चोबदार ने मुलायमियत से उसका हाथ पकड़कर यार के कूचे से उसको निकाल दिया और फिर तीसरी बार वह प्रेम का पुजारी निराशा के अथाह–सागर में ग़ोता खाने लगा।

दिलफ़िगार का हियाब छूट गया। उसे य़कीन हो गया कि मैं दुनिया में इसी तरह नाशाद और नामुराद मर जाने के लिए पैदा किया गया था और अब इसके सिवा और कोई चारा नहीं कि किसी पहाड़ पर चढ़कर नीचे कूद पड़ूं ताकि माशूक़ के जुल्मों की फ़रियाद करने के लिए

एक हड्डी भी बाक़ी न रहे। वह दीवाने की तरह उठा और गिरता–पड़ता एक गगनचुम्बी पहाड़ की चोटी पर जा पहुंचा। किसी और समय वह ऐसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने का साहस न कर सकता था मगर इस वक़्त जान देने के जोश में उसे वह पहाड़ एक मामूली टेकरी से ज्यादा ऊंचा न नज़र आया। क़रीब था कि वह नीचे कूद पड़े कि हरे–हरे कपड़े पहने हुए और हरा अमामा बांधे बुजुर्ग एक हाथ में तसबीह और दूसरे हाथ में लाठी लिये बरामद हुए और हिम्मत बढ़ाने वाले स्वर में बोले– दिलफ़िगार, नादान दिलफ़िगार, यह क्या बुज़दिलों जैसी हरकत है ! तू महुब्बत का दावा करता है और तुझे इतनी भी ख़बर नहीं कि मज़बूत इरादा मुहब्बत के रास्ते की पहली मंजिल है ? मर्द बन और यों हिम्मत न हार । पूरब की तरफ़ एक देश है। जिसका नाम हिन्दोस्तान है, वहां जा तेरी आरजू पूरी होगी ।

यह कहकर हज़रते ख़िज्र ग़ायब हो गये। दिलफ़िगार ने शुक्रिये नमाज़ अदा की और ताज़ा हौसले, ताज़ा जोश और अलौकिक सहायता का सहारा पाकर खुश–खुश पहाड़ से उतरा और हिन्दोस्तान की तरफ चल पड़ा।

मुद्दतों तक कांटे से भरे जंगलो, आग बरसाने वाले रेगिस्तानों, कठिन घाटियों और अलंघ्य पर्वतों को तय करने के बाद दिलफ़िगार हिन्द की पाक सरज़मीन में दाखिल हुआ और एक ठंडे पानी के सोते में सफ़र की तकलीफ़े धेकर थकान के मारे नदी के किनारे लेट गया। शाम होते–होते वह एक चटिमल मैदान में पहुंचा जहां बेशुमार अधमरी और बेजान लाशें बिना कफ़न के पड़ी हुई थीं। चील–कौए और वहशी दरिन्दे भरे पड़े थे और सारा मैदान खून से लाल हो रहा था । वह डरावना दृश्य देखते ही दिलफ़िगार का जी दहल गया। या खुदा, किस मुसीबत में जान फंसी, मरनेवालों का कराहना, सिसकना और एड़ियां रगड़कर जान देना, दरिन्दों का हड्डियों को नोचना और गोश्त के लोथड़ों का लेकर भागना, ऐसा हौलनाक सीन दिलफ़िगार ने कभी न देखा था। यकायक उसे ख्याल आया, यह लड़ाई का मैदान है और यह लाशें सूरमा सिपाहियों की है। इतने में क़रीब से कराहने की आवाज़ आयी। दिलफ़िगार उस तरफ़ फिरा तो देखा कि एक लम्बा तड़ंगा आदमी, जिसका मर्दाना चेहरा जान निकलने की कमज़ोरी से पीला हो गया है, जमीन पर सर झुकाये पड़ा हुआ है। सीने से खून का फ़ौव्वारा जारी है, मगर आबदार तलवार की मूठ पंजे से अलग नहीं हुई। दिलफ़िगार से एक चीथड़ा लेकर घाव के मुंह पर

रख दिया ताकि खून रूक जाय और बोला– ऐ जवांमर्द, तू कौन है ? जवांमर्द ने सुनकर आंखे खोली और वीरों की तरह बोला– क्या तू नहीं जानता मैं कौन हूं, क्या तूने आज इस तलवार की काट नहीं देखी? मैं अपनी मां का बेटा और भारत मां का सपूत हूं। यह कहते–कहते उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये। पीला चेहरा गुस्से से लाल हो गया और आबदार शमशीर फिर अपना जौहर दिखाने के लिए चमक उठी। दिलफ़िगार समझ गया कि यह इस वक्त मुझे दुश्मन समझ रहा है, नरमी से बोला–ऐ जवांमर्द, मैं तेरा दुश्मन नहीं हूं। अपने वतन से निकला हुआ एक ग़रीब मुसाफ़िर हूं। इधर भूलता–भटकता आ निकला। बराय मेहरबानी मुझसे यहां की कुल कैफ़ियत बयान कर।

यह सुनते ही घायल सिपाही बहुत मीठे स्वर में बोला– अगर तू मुसाफ़िर है तो आ खून से तर पहलू में बैठ जा क्योंकि यही दो अंगुल ज़मीन है जो मेरे पास बाक़ी रह गयी है और जो सिवाय मौत के कोई नहीं छीन सकता। अफ़सोस है कि तू यहां ऐसे वक्त में आया जब हम तेरा आतिथ्य–सत्कार करने के योग्य नहीं। हमारे बाप–दादा का देश आज हमारे हाथ से निकल गया और इस वक्त हम बेवतन है। मगर (पहलू बदलकर) हम ने हमलावर दुश्मन को बता दिया कि राजपूत अपने देश के लिए कैसी बहादुरी से जान देता है। यह आस–पास जो लाशें तू देख रहा है, यह उन लोगों की हैं, जो तलवार के घाट उतरे हैं। (मुस्कराकर) और गो कि मैं बेवतन हूं, मगर ग़नीमत है कि दुश्मन की ज़मीन पर मर रहा हूं। (सीने के घाव से चीथड़ा निकालकर) क्या तूने यह मरहम रख दिया ? खून निकलने दे, इसे रोकने से क्या फायदा ? क्या मैं अपने ही देश में गुलामी करने के लिए ज़िन्दा रहूं ? नहीं, ऐसी ज़िन्दगी से मर जाना अच्छा। इससे अच्छी मौत मुमकिन नहीं।

जवांमर्द की आवाज़ मद्धिम हो गयी, अंग ढीले पड़ गये, खून इतना ज्यादा बहा कि खुद–ब–खुद बन्द हो गया, रह–रहकर एकाध बूंद टपक पड़ता था। आख़िरकार सारा शरीर बेदम हो गया, दिल की हरकत बन्द हो गयी और आंखें मुंद गयीं । दिलफ़िगार ने समझा अब काम तमाम हो गया कि मरने वाले ने धीमें से कहा–भारतमाता की जय ! और उसके सीने से खून का आख़िरी क़तरा निकल पड़ा। एक सच्चे देशप्रेमी और देशभक्त ने देशभक्ति का हक़ अदा कर दिया। दिलफ़िगार पर इस दृश्य का बहुत गहरा असर पड़ा और उसके दिल ने कहा, बेशक दुनिया में खून के इस क़तरे से ज्यादा अनमोल चीज़ कोई नहीं हो सकती। उसने फ़ौरन

उस खून की बूंद को जिसके आगे यमन का लाल भी हेच है, हाथ में ले लिया और इस दिलेर राजपूत की बहादुरी पर हैरत करता हुआ अपने वतन की तरफ़ रवाना हुआ और सख्तियां झेलता आख़िकार बहुत दिनों के बाद रूप की रानी मलका दिलफ़रेब की ड्योढ़ी पर जा पहुंचा और पैग़ाम दिया कि दिलफ़िगार सुर्खरू और कामयाब होकर लौटा है और दरबार में हाजिर होना चाहता है। दिलफ़रेब ने उसे फौरन हाज़िर होने का हुक्म दिया। खुद हस्बे मामूल सुनहरे परदे की ओट में बैठी और बोली– दिलफ़िगार, अबकी तू बहुत दिनों के बाद वापस आया है। ला, दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ कहां है ?

दिलफ़िगार ने मेंहदी–रची हथेलियों को चूमते हुए खुन का वह क़तरा उस पर रख दिया और उसकी पूरी कैफ़ियत पूरजोश लहजे में कह सुनायी। वह खामोश भी न होने पाया था कि यकायक वह सुनहरा परदा हट गया और दिलफ़िगार के सामने हुस्न का एक दरबार सज़ा हुआ नज़र आया जिसकी एक–एक नाज़नीन जुलेखा में बढ़कर थी। दिलफ़िगार बड़ी शान के साथ सुनहरी मसनद पर सुशोभित हो रही थी। दिलफ़िगार हुस्न का यह तलिस्म देखकर अचम्भे में पड़ गया और चित्रालिखित–सा खड़ा रहा कि दिलफ़रेब मसनद से उठी ओर कई क़दम आगे बढ़कर उससे लिपट गयी। गाने वालियों ने खुशी के गाने शुरू किये, दरबारियों ने दिलफ़िगार को नजरें भेंट की और चांद–सूरज को बड़ी इज़्ज़त के साथ मसनद पर बैठा दिया। जब वह लुभावना गीत बन्द हुआ तो दिलफ़रेब खड़ी हो गयी और हाथ जोड़कर दिलफ़िगार से बोली–ऐ जांनिसार आशिक दिलफ़िगार ! मेरी दुआएं बर आयीं और खुदा ने मेरी सुन ली और तुझे कामयाब व सुर्खरू किया। आज से तू मेरा मालिक है और मैं तेरी लौंडी !

यह कहकर उसने एक रत्नजटित मंजूषा मंगायी और उसमें से एक तख्ती निकाली जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था —

'खून का वह आखिरी क़तरा जो वतन की हिफ़ाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है ।'

❑ ❑

शेख़ मख़मूर

मुल्के जन्नतनिशां के इतिहास में बहुत अंधेरा वक़्त था जब शाह किशवर की फ़तहों की बाढ़ बड़े जोर–शोर के साथ उस पर आयी। सारा देश तबाह हो गया। आजादी की इमारतें ढह गयीं और जानोमाल के लाले पड़ गये। शाह बामुराद खूब जी तोड़कर लड़ा, खूब बहादुरी का सबूत दिया और अपने खानदान के तीन लाख सूरमाओं को अपने देश पर चढ़ा दिया मगर विजेता की पत्थर काट देनेवाली तलवार के मुक़ाबले में उसकी यह मर्दाना जांबाजियां बेअसर साबित हुई। मुल्क पर शाह किशवरकुशा की हुकूमत का सिक्का जम गया और अपना सब कुछ आजादी के नाम पर कुर्बान करके एक झोंपड़े में ज़िन्दगी बसर करने लगा ।

यह झोंपड़ा पहाड़ी इलाकें में था। आस–पास जंगली क़ौमें आबाद थीं और दूर–दूर तक पहाड़ों के सिलसिले नज़र आते थे। इस सुनसान जगह में शाह बामुराद मुसीबत के दिन काटने लगा, दुनिया में अब उसका कोई दोस्त न था। वह दिन भर आबादी से दूर एक चट्टान पर अपने ख़्याल में मस्त बैठा रहता था। लोग समझते थे कि यह कोई ब्रह्मज्ञान के नशे में चूर सूफ़ी है। शाह बामुराद को यों बसर करते एक जमाना बीत गया और जवानी की बिदाई और बुढ़ापे के स्वागत की तैयारियां होने लगीं ।

तब एक रोज़ शाह बामुराद बस्ती के सरदार के पास गया और उससे कहा– मैं अपनी शादी करना चाहता हूं। उसकी तरफ़ से पैगाम सुनकर वह अचम्भे में आ गया चूंकि दिल में शाह साहब के कमाल और फ़क़ीरी में गहरा विश्वास रखता था, पलटकर जवाब न दे सका और अपनी कुंवारी नौजवान बेटी उनको भेंट की। तीसरे साल इस युवती की क़ामनाओं की बाटिका में एक नौरस पौध उगा। शाह साहब खुशी के मारे जामे में फूले न समाये। बच्चे को गोद में उठा लिया और हैरत में डूबी हुई मां के सामने जोश–भरे लहजे में बोले–'खुदा का शुक्र है कि मुल्के जन्नतनिशां का वारिस पैदा हुआ।'

बच्चा बढ़ने लगा। अक़्ल और ज़हानत में, हिम्मत और ताकत में, वह अपनी दुगनी उम्र के बच्चों से बढ़कर था। सुबह होते ही ग़रीब रिन्दा बच्चे का बनाव–सिंगार करके और उसे नाश्ता खिलाकर अपने काम–धन्धों में लग जाती थी और शाह साहब बच्चे की उंगली पकड़कर उसे आबादी से दूर चट्टान पर ले जाते । वहां कभी उसे पढ़ाते, कभी हथियार चलाने के मश्क कराते और कभी उसे शाही कायदे समझाते। बच्चा था तो कामसिन, मगर इन बातों में ऐसा जी लगाता और ऐसे चाव से लगा रहता गोया उसे अपने वंश का हाल मालूम है। मिज़ाज भी बादशाहों जैसा था। गांव का एक–एक लड़का उसके हुक्म का फ़रमाबरदार था। मां उस पर गर्व करती, बाप फूला न समाता और सारे गांव के लोग समझते कि यह शाह साहब के जप–तप का असर है ।

बच्चा मसऊद देखते–देखते एक सोलह साल का नौजवान शहजादा हो गया। देखकर देखनेवाले के दिल को एक नशा–सा होता था। एक रोज शाम का वक्त था, शाह साहब अकेले सैर करने गये और जब लौटे तो उनके सर पर एक जड़ाऊ ताज शोभा दे रहा था। रिन्दा

उनकी यह हुलिया देखकर सहम गयी और मुह से कुछ बोल न सकी। तब उन्होंने नौजवान मसऊद को गले से लगाया, उसी वक्त उसे नहलाया– धुलाया और एक चट्टान के तख्त पर बैठाकर दर्द–भरे लहजे में बोले–मसऊद, मैं आज तुमसें रूखसत होता हूं और तुम्हारी अमानत तुम्हें सौंपता हूं। यह उसी मुल्के जन्नतनिशां का ताज है। कोई वह जमाना था, कि यह ताज तुम्हारे बदनसीब बाप के सर पर जेब देता था, अब वह तुम्हें मुबारक हो। रिन्दा ! प्यारी बीबी ! तेरा बदकिस्मत शौहर किसी जमाने में इस मुल्क का बादशाह था और अब तूं उसकी मलिका है। मैने यह राज़ तुमसे अब तक छिपाया था मगर हमारे अलग होने का वक़्त बहुत पास है। अब छिपाकर क्या करूं। मसऊद, तुम अभी बच्चे हो, मगर दिलेर और समझदार हो। मुझे यक़ीन है कि तुम अपने बूढ़े बाप की आख़िरी वसीयत पर ध्यान दोगे और उस पर अमल करने की कोशिश करोगे। यह मुल्क तुम्हारा है, यह ताज तुम्हारा है और यह रिआया तुम्हारी है। तुम इन्हें अपने क़ब्ज़े में लाने की मरते दम तक कोशिश करते रहना और मगर तुम्हारी तमाम क़ोशिश नाकाम हो जायें और तुम्हें भी यही बेसरोसामानी की मौत नसीब हो तो यही वसीयत तुम अपने बेटे से कर देना और यह ताज जो उसकी अमानत होगी उसके सुपुर्द करना। मुझे तुमसे और कुछ नहीं कहना है, खुदा तुम दोनों को खुशोखुर्रम रक्खे और तुम्हें मुराद को पहुंचाये ।

यह कहते–कहते शाह साहब और आंखें बन्द हो गयीं। रिन्दा दौड़ कर उनके पैरों से लिपट गयी और मसऊद रोने लगा। दूसरे दिन सुबह को गांव के लोग जमा हुए और एक पहाड़ी गुफ़ा की गोद में लाश रख दी ।

2

साह किशवरकुशा ने आधी सदी तक खूब इन्साफ़ के साथ राज किया मगर किशवरकुशा दोयम ने सिंहासन पर आते ही अपने अक़्लमन्द बाप के मंत्रियों को एक सिरे से बर्खास्त कर दिया और अपनी मर्जी के मुआफ़िक नये–नये वज़ीर और सलाहकार नियुक्त किये। सल्तनत का काम रोज़–ब–रोज़ बिगड़ने लगा। सरदारों ने बेइन्साफ़ी पर कमर बांधी और हुक्काम रियाआ पर ज़ोर–ज़बर्दस्ती करने लगे। यहां तक कि ख़ानदाने मुरादिया के एक पुराने नमकख़ोर ने मौक़ा अच्छा देखकर बग़ावत का झंडा बुलन्द कर दिया। आस–पास से लोग उसके झंडे के

नीचे जमा होने लगे और कुछ ही हफ़्तों में एक बड़ी फौज क़ायम हो गयी और मसऊद भी नमकख़ोर सरदार की फ़ौज में आकर मामूली सिपाहियों का काम करने लगा ।

मसऊद का अभी यौवन का आरम्भ था। दिल में मर्दाना जोश और बाजुओं में शेरों की कूवत मौजूद थी। ऐसा लम्बा–तड़ंगा सुन्दर नौजवान बहुत कम किसी ने देखा होगा। शेरों के शिकार का उसे इश्क़ था। दूर–दूर तक के जंगल दरिन्दों से खाली हो गये। सबेरे से शाम तक उसे सैरो–शिकार के सिवा और कोई धंधा न था। लबोलहजा ऐसा दिलकश पाया था कि जिस वक़्त मस्ती में आकर कोई क़ौमी गीत छेड़ देता तो राह चलते मुसाफ़िरों और पहाड़ी औरतों का ठट लग जाता था। कितने ही भोले–भोले दिलों पर उसकी मोहिनी सूरत नक़्श थी, कितनी ही आंखें उसे देखने को तरसतीं और कितनी जानें उसकी मुहब्बत की आगे से घुलती थीं। मगर मऊसद पर अभी तक किसी का जादू न चला था। हां अगर उसे मुहब्बत थी तो अपनी आबदार शमशीर से जो उसने बाप से बिरसे में पायी थी। इस तेग़ को वह जान से ज्यादा प्यार करता। बेचारा खुद नंगे बदन रहता मगर उसके लिए तरह–तरह के मियान बनवाये थे। उसे एक दम के लिए अपने पहलू से अलग न करता। सच है दिलेर सिपाही की तलवार उसकी निगाहों में दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारी होती है। ख़ास कर वह आबदार ख़ंजर जिसका जौहर बहुत से मौकों परखा जा चुका हो। इसी तेग़ से मसऊद ने कितने ही जंगली दरिन्दों को मारा था, कितने ही लुटेरों और डाकुओं को मौत का मज़ा चखाया था और उसे पूरा यक़ीन था कि यही तलवार किसी दिन किशवरकुशा दोयम के सर पर चमकेगी और उसकी शहरग के खून से अपनी जबान तर करेगी ।

एक रोज़ वह एक शेर का पीछा करते–करते बहुत दूर निकल गया। धूप सख्त थी, भूख और प्यास से जी बेताब हुआ, मगर वहां न कोई मेवे का दरख्त नज़र आया न कोई बहता हुआ पानी का सोता जिससे भूख और प्यास की आग बुझाता। हैरान और परेशान खड़ा था कि सामने से एक चांद जैसी सुन्दर युवती हाथ में बर्छी लिये और बिजली की तरह तेज़ घोड़े पर सवार आती हुई दिखाई दी। पसीने की मोती जैसी बूंदें उसे माथे पर झलक रही थीं और अम्बर की सुगन्ध में बसे हुए बाल दोनों कंधें पर एक सुहानी बेतकल्लुफ़ी से बिखरे हुए थे। दोनों की निगाहें चार हुई और मसऊद का दिल हाथ से जाता रहा। उस ग़रीब ने आज तक दुनिया को जला डालनेवाला ऐसा हुस्न न देखा था, उसके ऊपर एक सकता–सा छा

गया। यह जवान औरत जंगल में मलिका शेर अफ़गन के नाम से मशहूर थी।

मलिका ने मसऊद को देखकर घोड़े की बाग खींच ली और गर्म लहजे से बोली– क्या तू वही नौजवान है, जो मेरे इलाक़े के शेरों का शिकार किया करता है ? बतला तेरी इस गुस्ताख़ी की क्या सजा दूं ?

यह सुनते ही मसऊद की आंखें लाल हो गयीं और बरबस हाथ तलवार की मूठ पर जा पहुंचा मगर ज़ब्त करके बोला– इस सवाल का जवाब मैं खूब देता, मगर आपके बजाय यह किसी दिलेर मर्द की ज़बान से निकलता !

इन शब्दों ने मलिका के गुस्से की आग को और भी भड़का दिया उसने घोड़े को चमकाया और बर्छी उछालती सर पर आ पहुंची और वार पर वार करने शुरू कर किये। मसऊद के हाथ–पांव बेहद थकान से चूर हो रहे थे और मलिका शेर अफ़गन बर्छी चलाने की कला में बेजोड़ थी। उसने चरके पर चरके लगाये यहां तक कि मसऊद घायल होकर घोड़े से गिर पड़ा। उसने अब तक मलिका के वारों को कटाने के सिवाय खुद एक हाथ भी न चलाया था।

तब मलिका घोड़े से कूदी और अपना रूमाल फाड़–फाड़ कर मसऊद के ज़ख्म बांधने लगी। ऐसा दिलेर और ग़ैरतमन्द जवांमर्द उसकी नज़र से आज तक न गुज़रा था। वह उसे बहुत आराम से उठवाकर अपने खेमे में लायी और पूरे दो हफ़्ते तक उसकी परिचर्या में लगी रही यहां तक कि घाव भर गया और मसऊद का चेहरा फिर पूरनमासी के चांद की तरह चमकने लगा। मगर हसरत यह थी कि अब मलिका ने उसके पास आना–जाना छोड़ दिया।

एक रोज़ मलिका शेर अफ़गन ने मसऊद को दरबार में बुलाया और यह बोली–ऐ घमण्डी नौजवान ! खुदा का शुक्र है कि तू मेरी बर्छी की चोट से अच्छा हो गया, अब मेरे इलाक़े से जा, तेरी गुस्ताख़ी माफ़ करती हूं। मगर आइन्दा मेरे इलाक़े में शिकार के लिए आने की हिम्मत न करना। फ़िलहार ताकीद के तौर पर तेरी तलवार छीन ली जायगी ताकि तू घमंड के नशे से चूर होकर फिर इधर क़दम बढ़ाने कि हिम्मत न करे ।

मसऊद ने नंगी तलवार मियान से खींच ली और कड़ककर बोला– जब तक मेरे दम में दम है, कोई यह तलवार मुझसे नहीं ले

सकता। यह सुनते ही एक देव जैसा लम्बा–तड़ंगा हैकल पहलवान ललकार कर बढ़ा और मसऊद की कलाई पर तेग़े का तुला हुआ हाथ चलाया। मसऊद ने वार खाली दिया और सम्हलकर तेग़े का वार किया तो पहलवान की गर्दन की पट्टी तक बाक़ी न रही। यह कैफ़ियत देखते ही मलिका की आंखों से चिनगारियां उड़ने लगीं। भयानक गुस्से के स्वर में बोली– ख़बरदार, यह शख्स यहां से जिन्दा न जाने पावे। चारों तरफ से आज़माये हुए मज़बूत सिपाही पिल पड़े और मसऊद पर तलवारों और बर्छियों की बौछार पड़ने लगी ।

मसऊद का जिस्म जख़्मों से छलनी हो गया। खून के फ़वारे जारी थे और खून प्यासी तलवारें ज़बान खोल बार–बार उसकी तरफ़ लपकती थीं और उसका खून चाटकर अपनी प्यास बुझा लेती थीं । कितनी ही तलवारें उसकी ढाल से टकराकर टूट गयीं, कितने बहादुर सिपाही ज़ख्मी होकर तड़पने लगे और कितने ही उस दुनिया को सिधरे। मगर मसऊद के हाथ में वह आबदार शमशीर ज्यों–की–त्यों बिजली की तरह कौंधती और सुथराव करती रही। यहां तक कि इस फ़न के कमाल और समझनेवाली मलिका ने खुद उसकी तारीफ़ का नारा बुलन्द किया और उसके तेग़े को चूमकर बोली– मसऊद! तू बहादूरी के समुन्दर का मगर है। शेरों के शिकार में वक़्त बर्बाद मत कर। दुनिया में शिकार के अलावा और भी ऐसे मौके है जहां तू अपने आबदार तेग़ का जौहर दिखा सकता है। जा और मुल्कोक़ौम की ख़िदमत कर। सैरो शिकार हम जैसी औरतों के लिए छोड़ दे।

मसऊद के दिल ने गुदगुदाया, प्यार की बानी ज़बान तक आयी मगर बाहर निकल न सकी और उसी वक्त वह अपने दिल में किसी की पलकों की टीस लिये हुए तीन हफ़्तों के बाद अपनी बेक़रार मां के कदमों पर जा गिरा।

3

नमकख़ोर सरदार की फ़ौज रोज़–ब–रोज़ बढ़ने लगी। पहले तो वह अंधेरे के पर्दे में शाही ख़ज़ानों पर हाथ बढ़ाता रहा, धीरे–धीरे एक बाक़ायदा फ़ौज तैयार हो गयी। यहां तक कि सरदार को शाही फ़ौजों के मुक़ाबले में तलवार आजमाने का हौसला हुआ, और पहली ही लड़ाई में चौबीस क़िले इस नयी फ़ौज के हाथ आ गये। शाही फ़ौज ने लड़ने में

जरा भी कसर न की मगर वह ताकत, वह जोश, वह जज्बा जो सरदार नमकख़ार और उसके दोस्तों के दिलों को हिम्मत के मैदान में आगे बढ़ाता रहता था किशवरकुशा दोयम के सिपाहियों में गायब था। लड़ाई के कला–कौशल, हथियारों की खूबी और ऊपर दिखायी पड़ने वाली शान–शौकत के लिहाज़ से दोनों फ़ौजों का कोई मुक़ाबला न था। बादशाह के सिपाही लहीम–शहीम, लम्बे–तड़ंगे और आज़माये हुए थे। उनके साज–समान और तौर–तरीक़े से देखने वालों के दिलों पर एक डर सा छा जाता था और वहम भी यह गुमान न कर सकता था कि इस ज़बर्दस्त जमात कें मुक़ाबले में निहत्थी–सी, अधनंगी और बेक़ायदा सरदारी फ़ौज एक पल के लिए भी पैर जमा सकेगी। मगर जिस वक्त 'मारो' की दिल बढ़ाने वाली पुकार हवा में गूंजी एक अजीबोग़रीब नज़्ज़ारा सामने आया। सरदार के सिपाही तो नारे मारकर आगे धावा करते थे और बादशाह की फ़ौज भागने की राह पर दबी हुए निगाहें डालती थी। दम की दम में मोर्चे गुबार की तरह फट गये और जब मस्क़ात के मज़बूत क़िले मे सरदार नमकख़ोर शाही क़िलेदार की मसनद पर अमीराना ठाट–बाट में बैठा और अपनी फ़ौज की कारगुजारियों और जांबाजियों का इनाम देने के लिए एक तश्त में सोने के तमग़ मंगवाकर रक्खे तो सबसे पहले जिस सिपाही का नाम पुकारा गया वह नौजवान मसऊद था।

मसऊद पर इस वक्त उसकी फ़ौज घमंड करती थी। लड़ाई के मैदान में सबसे पहले उसी की तलवार चमकती थी। और धावे के वक़्त सबसे पहले उसी के क़दम उठते थे। दुश्मन के मोर्चों में ऐसा बेधड़क घुसता था जैसे आसमान में चमकता हुआ लाल तारा। उसकी तलवार के वार क़यामत थे और उसके तीर का निशाना मौत का सन्देश।

मगर टेढ़ी चाल की तक़दीर से उसका यह प्रताप, यह प्रतिष्ठा न देखी गयी। कुछ थोड़े से आज़माये हुए अफ़सर जिनके तेग़ों की चमक मसऊद के तेग़ के सामने मन्द पड़ गयी थीं, उससे खार खाने लगे और उसे मिटा देने की तदबीरें सोचने लगे। संयोग से उन्हें मौक़ा भी जल्द हाथ आ गया ।

किशवरकुशा दोयम ने बाग़ियों को कुचलने के लिए अबकी एक जबर्दस्त फ़ौज रवाना की और मीरशुजा को उसका सिपहसालार बनाया जो लड़ाई के मैदान में अपने वक़्त का इसफ़ंदियार था। सरदार नमक–ख़ोर ने यह खबर पायी तो हाथ–पांव फूल गये। मीरशुजा के मुकाबले में आना

अपनी हार को बुलाना था। आख़िरकार यह राय तय पाई कि इस जगह से आबादी का निशान मिटाकर हम लोग क़िलेबन्द हो जायें। उस वक़्त नौजवान मसऊद ने उठकर बड़े पुरजोश लहजे में कहा–

'नहीं, हम क़िलेबन्द न होंगे, हम मैदान में रहेंगे और हाथोंहाथ दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे। हमारे सीनों की हड्डियां ऐसी कमज़ोर नहीं है कि तीर–तुपुक के निशाने बर्दाश्त न कर सकें। क़िलेबन्द होना इस बात का एलान है कि हम आमने–सामने नहीं लड़ सकते। क्या आप लोग, जो शाह बामुराद के नामलेवा है, भूल गये कि इसी मुल्क पर उसने अपने ख़ानदान के तीन लाख सपूतों को फूल की तरह चढ़ा दिया ? नहीं, हम हरगिज़ क़िलेबन्द न होंगे। हम दुश्मन के मुक़ाबले में ताल ठोंककर आयंगे और अगर खुदा इंसाफ़ करनेवाला है तो ज़रूर हमारी तलवारें दुश्मनों से गले मिलेंगी और हमारी बर्छिया उनके पहलू में जगह पाएंगी ।'

सैकड़ों निगाहें मसऊद के पुरजोश चेहरे की तरफ़ उठ गयीं। सरदारों की त्योरियों पर बल पड़ गये और सिपाहियों के सीने जोश से धड़कने लगे। सरदार नमकख़ोर ने उसे गले से लगा लिया और बोले– मसऊद, तेरी हिम्मत और हौसले की दाद देता हूं। तू हमारी फ़ौज की शान है। तेरी सलाह मर्दाना सलाह है। बेशक हम क़िलेबन्द न होंगे। हम दुश्मन के मुक़ाबिले में ताल ठोंकर आएंगे और अपने प्यार जन्नतनिशां के लिए अपना खून पानी की तरह बहायेंगे। तू हमारे लिए आगे–आगे चलने वाली मशाल है और हम सब आज इसी रोशनी में क़दम आगे बढ़ायेंगे ।

मसऊद ने चुने हुए सिपाहियों का एक दस्ता तैयार किया और कुछ इस दम–ख़म और कुछ इस जोशोख़रोश से मीरशुजा पर टूटा कि उसका सारी फ़ौज में खलबली पड़ गयी। सरदार नमकख़ोर ने जब देखा कि शाही फ़ौज के क़दम डगमगा रहे हैं, तो अपनी पूरी ताक़त से बादल और बिजली की तरह लपका और तेग़ों से तेग़े और बर्छियों से बर्छियों खड़कने लगीं। तीन घंटे तक बला का शोर मचा रहा, यहां तक कि शाही फ़ौज के क़दम उखड़ गये और वह सिपाही जिसकी तलवार मीरशुजा से गले मिली वह मसऊद था ।

तब सरदारी फ़ौज और अफ़सर सब–के–सब लूट के माल पर टूटे और मसऊद ज़ख़्मों से चूर और खून में रंगा हुआ अपने कुछ जान पर खेलनेवाले दोस्तों के साथ मस्क़ात के क़िले की तरफ़ लौटा मगर जब होश न आंखें खोलीं और हवास ठिकाने हुए तो क्या देखता है कि मैं एक सजे हुए कमरे में मख़मली गद्दे पर लेटा हुआ हूं। फूलों की सुहानी महक

और लम्बी छरहरी सुन्दरियों के जमघट से कमरा चमन बना हुआ था। ताज्जुब से इधर–उधर ताकने लगा कि इतने में एक अप्सरा–जैसी सुन्दर युवती तश्त में फूलो का हार लिए धीरे–धीरे आती हुई दिखायी दी कि जैसे बाहर फूलों की डाली पेश करने आ रही है। उसे देखते ही उन लम्बी छरहरी सुन्दरियों ने आंखें बिछायीं और उसकी हिनाई हथेली को चूमा मसऊद देखते ही पहचान गया। यह मलिका शेर अफ़गान थी।

मलिका ने फूलों का हार मसऊद के गले में डाला। हीरे–जवाहरात उस पर चढ़ाये और सोने के तारो से टकी हुई मसनद पर बड़ी आन–बान से बैठ गयी। साज़िन्दों ने बीन ले–लेकर विजयी अतिथि के स्वागत में सुहाने राग अलापने शुरू किये।

यहां तो नाच–गाने की महफ़िल थी उधर आपसी डाह के नये–नये शिगूफ़े खिलाये। सरदार से शिकायत की कि मसऊद ज़रूर दुश्मन से जा मिला है और आज जान–बूझकर फ़ौज का एक दस्ता लेकर लड़ने को गया था ताकि उसे ख़ाक और खून में सुलाकर सरदारी फ़ौज को बेचिराग़ कर दे। इसके सबूत में कुछ जाली ख़त भी दिखाये और इस कमीनी कोशिश में ज़बान की ऐसी चालाकी से काम लिया कि आखिर सरदार को इन बातों पर यक़ीन आ गया। पौ फटे जब सऊद मलिका शेर अफ़गन के दरबार से विजय का हार गले में डाले सरदार की बधाई देने गया तो बजाय इसके कि क़द्रदानी का सिरोपाव और बहादुरी का तमग़ा पाये, उसको खरी–खोटी बातों के तीर का निशाना बनाया गया और उसे हुक्म मिला कि तलवार कमर से खोलकर रख दे ।

मसऊद स्तम्भित रह गया। यह तेग़ा मैंने अपने बाप से विरसे में पाया है । और यह मेरे पिछले बड़प्पन की आख़िरी यादगार है। यह मेरी बांहों की ताक़त और मेरा सहयोगी और मददगार है। इसके साथ कैसी–कैसी स्मृतियां जुड़ी हुई है, क्या मैं जीते जी इसे अपने पहलू से अलग कर दूं ? अगर मुझ पर कोई आदमी लड़ाई के मैदान से क़दम हटाने का इलज़ाम लगा सकता, अगर कोई शख़्स इस तेग़े का इस्तेमाल मेरे मुकाबिले में ज्यादा कारगुज़ारी के साथ कर सकता, अगर मेरी बांहों में तेग़ा पकड़ने की ताक़त न होती तो खुदा की क़सम, मैं खुद ही तेग़ा कमर से खोलकर रख देता। मगर खुदा का शुक्र है कि मैं इन इलज़ामों से बरी हूं। फिर क्यों मैं इसे हाथ से जाने दूं ? क्या इसलिए कि मेरी बुराई चाहने वाले कुछ थोड़े से डाहियों ने सरदार नमकख़ोर का मन मेरी तरफ से फेर दिया है। ऐसा नहीं हो सकता।

मगर फिर उसे ख्याल आया, मेरी सरकशी पर सरदार और भी गुस्सा हो जायंगे और यकीनन मुझसे तलवार शमशीर के ज़ोर से छीन ली जायगी। ऐसी हालत में मेरे ऊपर जान छिड़कनेवाले सिपाही कब अपने काबू में रख सकेंगे। ज़रूर आपस में खून की नदियां बहेंगी और भाई–भाई का सिर कटेगा। खुदा न करे कि मेरे सबब से यह दर्दनाक मार–काट हो। यह सोचकर उसने चुपके से शमशीर सरदार नमकख़ोर के बग़ल में रख दी और खुद सर नीचा किये ज़ब्त की इन्तहाई क़ूवत से गुस्से को दबाता हुआ ख़ेमे से बाहर निकल आया ।

मसऊद पर सारी फ़ौज गर्व करती थी और उस पर जानें वारने के लिए हथेली में सर लिए रहती थी। जिस वक़्त उसने तलवार खोली है, दो हज़ार सूरमा सिपाही मियान पर हाथ रक्खे और शोले बरसाती हुई आंखों से ताकते, कनौतियां बदल रहे थे । मसऊद के एक ज़रा से इशारे की देर थी और दम के दम में लाशों के ढेर लग जाते। मगर मसऊद बहादुरी ही में बेजोड़ न था, ज़ब्त और धीरज में भी उसका जवाब न था। उसने यह ज़िल्लत और बदनामी सब गवारा की, तलवार देना गवारा किया, बग़ावत का इलज़ाम लेना गवारा किया और अपने साथियों के सामने सर झुकाना गवारा किया मगर यह गवारा न किया कि उसके कारण फ़ौज में बग़ावत और हुक्म न मानने का ख़्याल पैदा हो। और ऐसे नाज़ुक वक्त में जब कि कितने ही दिलेर जिन्होंने लड़ाई की आज़माइश में अपनी बहादुरी का सबूत दिया था, ज़ब्त हाथ से खो बैठते और गुस्से की हालत में एक–दूसरे के गले काटते, मसऊद खामोश रहा और उसके पैर नहीं डगमगाये। उसकी पेरशानी पर ज़रा भी बल न आया, उसके तेवर ज़रा भी न बदले। उसने खून बरसाती हुई आंखों से दोस्तों को अलविदा कहा और हसरत भरा दिल लिए उठा और एक गुफ़ा में छिप बैठा और जब सूरज डूबने पर वहां से उठा तो उसके दिल ने फ़ैसला कर लिया था कि यह बदनामी का दाग़ माथे से मिटाऊंगा और डाहियों को शर्मिन्दगी के गड्ढे में गिराऊंगा।

मसऊद ने फ़कीरों का भेस अख़्तियार किया, सर पर लोहे की टोपी के बजाय लम्बी जटाएं बनायीं, जिस्म पर ज़िरहबख़्तर के बजाय गेरूए रंग का बाना सजा, हाथ में तलवार की बजाय फ़क़ीरों का प्याला लिया। जंग के नारे के बजाय फ़क़ीरों की सदा बुलन्द की और अपना नाम शेख़ मख़मूर रख दिया। मगर यह जोगी दूसरे जोगियों की तरह धूनी रमाकर न बैठा और न उस तरह का प्रचार शुरू किया। वह दुश्मन की

फ़ौज में जाता और सिपाहियों की बातें सुनता। कभी उनकी मोर्चे–बन्दियों पर निगाह दौड़ाता, कभी उनके दमदमों और क़िले की दीवारों का मुआइना करता। तीन बार सरदार नमकख़ोर दुश्मन के पंजे से ऐसे वक्त निकले जब कि उन्हें जान बचाने की कोई आस न रही थी। और यह सब शेख़ मख़मूर की करामत थी। मिनक़ाद का क़िला जीतना कोई आसान बात न थी। पांच हजार बहादूर सिपाही उसकी हिफ़ाज़त के लिए कुर्बान होने को तैयार बैठे थे। तीस तोपें आग के गोले उगलने के लिए मुंह खोले हुए थीं और दो हज़ार सधे हुए तीरन्दाज हाथों में मौत का पैग़ाम लिए हुक्म का इन्तजार कर रहे थे। मगर जिस वक्त सरदार नमकख़ोर अपने दो हज़ार बहादुरों के साथ इस क़िले पर चढ़ा तो पांचों हजार दुश्मन सिपाही काठ के पुतले बन गये। तोपों के मुंह बन्द हो गये और तीरन्दाज़ो के तीर हवा में उड़ने लगे। और यह सब शेख़ मख़मूर की करामात थी । शाह साहब वहीं मौजूद थे। सरदार दौड़कर उनके क़दमों पर गिर पड़ा और उनके पैरों की धूल माथे पर लगायी।

4

किशवरकुशा दोयम का दरबार सजा हुआ है। अंगूरी शराब का दौर चल रहा है और सरदार के बड़े–बड़े अमीर और राईस अपने–अपने दर्जे से हिसाब के अदम के साथ घुटना मोड़े बैठे हैं। यकायक भेदियों ने ख़बर दी कि मीरशुजा की हार हुई और जान से मारे गये। यह सुनकर किशवरकुशा के चेहरे पर चिन्ता के लक्षण दिखायी पड़े। सरदारों को सम्बोधित करके बोले–आप लोगों में ऐसा दिलेर कौन है जो इस बदमाश सरदार का सर क़लम करके हमारे सामने पेश करे। इसकी गुस्ताखियां अब हद से आगे बढ़ी जाती हैं। आप ही लोगों के बड़े–बूढ़ों ने यह मुल्क़ तलवार के जोर से गुरादिया ख़ानदान से छीना था। क्या आप उन्हीं पुरखों की औलाद नही है? यह सुनते ही सरदारों में एक सन्नाटा छा गया, सबके चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगीं और किसी की हिम्मत न पड़ी कि बादशाह की दावत क़बूल करे। आख़िरकार शाह किशवरकुशा के बुड्ढे चचा खुद उठे और बोले– ऐ शाहे जवांबख्त ! मैं तेरी दावत क़बूल करता हूं, अगरचे मैं बुड्ढा हो गया हूं और बाजूओं में तलवार पकड़ने की ताक़त बाक़ी नहीं रही, मगर मेरे खून में वही गर्मी और दिल में वही जोश है जिनकी बदौलत हमने यह मुल्क शाह बामुराद से लिया था। या तो मैं इस नापाक कुत्ते की

हस्ती ख़ाक में मिला दूंगा या इस कोशिश में अपनी जान निसार कर दूंगा, ताकि अपनी आंखों से सल्तनत की बर्बादी न देखूं। यह कहकर अमीर पुरतदबीर वहां से उठा और मुस्तैदी से जंगी तैयारियों में लग गया। उसे मालूम था कि यह आख़िरी मुक़ाबिला है और अगर इसमें नाकाम रहे तो मर जाने के सिवाय और कोई चारा नहीं है। उधर सरदार नमकख़ोर धीरे–धीरे राजधानी की तरफ़ बढ़ता आता था, यकायक उसे ख़बर मिली कि अमीर पुरतदबीर बीस हजार पैदल और सवारों के साथ मुक़ाबिले के लिए आ रहा है ।

यह सुनते ही सरदार नमकख़ोर की हिम्मतें छूट गयीं। अमीर पुरतदबीर बुढ़ापे के बावजूद अपने वक़्त का एक ही सिपहसालार था। उसका नाम सुनकर बड़े–बड़े बहादुर कानों पर हाथ रख लेते थे। सरदार नमकख़ोर का ख़्याल था कि अमीर की एक कोने में बैठे खुदा की इबादत करते होंगे। मगर उनको अपने मुक़ाबिले में देखकर उसके होश उड़ गये कि कहीं ऐसा न हो कि इस हार से हम अपनी सारी जातें खो बैठें और बरसों की मेहनत पर पानी फिर जाय। सब की यही सलाह हुई कि वापस चलना ही ठीक है। उस वक़्त शेख़ मख़मूर ने कहा–ऐ सरदार नमकख़ोर ! तूने मुल्के जन्ननिशां को छुटकारा दिलाने का बीड़ा उठाया है । क्या इन्हीं हिम्मतों से तेरी आरजूएं पूरी होंगी ? तेरे सरदार और सिपाहियों ने कभी मैदान से क़दम पीछे नहीं हटाया, कभी पीठ नहीं दिखायी, तीरों की बौछार को तुमने पानी की फुहार समझा और बन्दूकों की बाढ़ को फूलों की बहार। क्या इन चीजों से इतनी जल्दी तुम्हारा जी भर गया ? तुमने यह लड़ाई सल्तनत को बढ़ाने के कमीने इरादे से नहीं छेड़ी है। तुम सच्चाई और इंसाफ की लड़ाई लड़ रहे हो। क्या तुम्हारा जोश इतने जल्द ठण्डा हो गया ? क्या तुम्हारी इंसाफ़ की तलवार की प्यास इतनी जल्दी बुझ गयी ? तुम खूब जानते हो कि इंसाफ़ और सच्चाई की जीत ज़रूर होगी, तुम्हारी इन बहादुरियों का इनाम खुदा के दरबार से ज़रूर मिलेगा। फिर अभी से क्यों हौसले छोड़े देते हो ? क्या बात है, अगर अमीर पुरतदबीर बड़ा दिलेर और इरादे का पक्का सिपाही है। अगर वह शेर है तो तुम शेर मर्द हो अगर उसकी तलवार लोहे की है तो तुम्हारा तेग़ा फ़ौलाद का है। अगर उसके सिपाही जान पर खेलने वाले हैं तो तुम्हारे सिपाही भी सर कटाने के लिए तैयार हैं। हाथों में तेग़ा मज़बूत पकड़ो और खुदा का नाम लेकर दुश्मन पर टूट पड़ो तुम्हारे तेवर कहे देते हैं कि मैदान तुम्हारा है।

इस पुरजोश तक़रीर ने सरदारों के हौसले उभार दिये। उनकी आंखें लाल हो गयीं, तलवारें पहलू बदलने लगी और क़दम बरबस लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़े। शेख़ मख़मूर ने तब फ़कीरी बाना उतार फेंका, फ़कीरी प्याले को सलाम किया और हाथों में वही तलवार और ढाल लेकर जो किसी वक्त मसऊद से छीने गये थे, सरदार नमकख़ोर के साथ–साथ सिपाहियों और अफ़सरों का दिल बढ़ाते शेरों की तरह बिफरता हुआ चला। आधी रात का वक़्त था, अमीर के सिपाही अभी मंजिलें मारे चले आते थे। बेचारे दम भी न लेने पाये थे कि एकाएक सरदार नमकख़ोर के आ पहुंचने की ख़बर पायी। होश उड़ गये और हिम्मतें टूट गयीं। मगर अमीर शेर की तरह गरज कर ख़ेमे से बाहर आया और दम के दम में अपनी सारी फ़ौज दुश्मन के मुक़ाबले के क़तार बांधकर खड़ी कर दी कि जैसे एक माली था कि आया और इधर–उधर बिखरे हुए फूलों को एक गुलदस्ते में सजा गया ।

दोनों फ़ौज़ें काले–काले पहाड़ों की तरह आमने–सामने खड़ी है। और तोपों का आग बरसाना ज्वालामुखी का दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। उनकी घनगरज आवाज़ से बला का शोर मच रहा था। यह पहाड़ धीरे–धीरे आगे बढ़ते गये। यकायक वह टकराये और कुछ इस जोर से टकराये कि ज़मीन कांप उठी और घमसान की लड़ाई शुरू हो गयी। मसऊद का तेग़ा इस वक़्त एक बला हो रहा था, जिधर पहुंचता लाशों के ढेर लग जाते और सैकड़ों सर उस पर भेंट चढ़ जाते ।

पौ फटे तक तेंग़े यों ही खड़का किये और यों ही खून का दरिया बहता रहा। जब दिन निकला तो लड़ाई का मैदान मौत का बाज़ार हो रहा था। जिधर निगाह उठती थी, मरे हुओं के सर और हाथ–पैर लहू में तैरते दिखायी देते थे। यकायक शेख़ मख़मूर की कमान से एक तीर बिजली बनकर निकला और अमीर पुरतदबीर की जान के घोंसले पर गिरा और उसके गिरते ही शाही फ़ौज भाग निकली और सरदारी फ़ौज फ़तेह का झण्डा उठाये राजधनी की तरफ़ बढ़ी ।

5

जब यह जीत की लहर–जैसी फ़ौज शहर की दीवार के अन्दर दाख़िल हुई तो शहर के मर्द और औरत, जो बड़ी मुद्दत से गुलामी की सख़्तियां झेल रहे थे उसकी अगवानी के लिए निकल पड़े। सारा शहर

उमड़ आया। लोग सिपाहियों को गले लगाते थे और उन पर फूलों की बरखा करते थे कि जैसे बुलबुलें थीं जो बहेलियें के पंजे से रिहाई पाने पर बाग़ में फूलों को चूम रही थीं। लोग शेख़ मख़मूर के पैरों की धूल माथे से लगाते थे और सरदार नमकख़ोर के पैरों पर खुशी के आंसू बहाते थे ।

अब मौक़ा था कि मसऊद अपना जोगिया भेस उतार फेंके और ताजोतख्त का दावा पेश करे। मगर जब उसने देखा कि मलिका शेर अफ़गन का नाम हरआदमी की ज़बान पर है तो ख़ामोश हो रहा है। वह ख़ूब जानता था कि अगर मैं अपने दावे को साबित कर दूं तो मलिका का दावा खत्म हो जायगा। मगर तब भी यह नामुमकिन था कि सख्त मारकाट के बिना यह फ़ैसला हो सके। एक पुरजोश और आरजूमन्द दिल के लिए इस हद तक ज़ब्त करना मामूली बात न थी । जबसे उसने होश संभाला, यह ख़याल कि मैं इस मुल्क का बादशाह हूं, उसके रगरेशे में घुल गया था। शाह बामुराद की वसीयत उसे एकदम को भी न भूलती थी। दिन को वह बादशाहत के मनसूबे बांधता और रात को बादशाहत के सपने देखता। यह यक़ीन कि मैं बादशाह हूं, उसे बादशाह बनाये हुए था। अफ़सोस, आज वह मंसूबे टूट गये और वह सपना तितर–बितर हो गया। मगर मसऊद के चरित्र में मर्दाना ज़ब्त अपनी हद तक पहुंच गया था। उसने उफ़ तक न की, एक ठंडी आह भी न भरी, बल्कि पहला आदमी जिसने मलिका के हाथों को चूमा और उसके सामने सर झुकाया, वह फ़कीर मख़मूर था। हां, ठीक उस वक़्त जब कि मलिका के हाथ को चूम रहा था, उसकी ज़िन्दगी भर की लालसाएं आंसू की एक बूंद बनकर मलिका की मेंहदी–रचा हथेली पर गिर पड़ी कि जैसे मसऊद ने अपनी लालसा का मोती मलिका को सौंप दिया। मलिका ने हाथ खींच लिया और फ़कीर मख़मूर के चेहरे पर मुहब्बत से भरी हुई निगाह डाली। सब सल्तनत के सब दरबारी भेंट दे चुके, तोपों की सलामियां दग़ने लगीं, शहर में धूमधाम का बाजार गर्म हो गया और खुशियां के जल्से चारों तरफ़ नज़र आने लगे ।

राजगद्दी के तीसरे दिन मसऊद खुदा की इबादत में बैठा हुआ था कि मलिका शेर अफ़गन अकेले उसके पास आयी और बोली–मसऊद, मैं एक नाचीज़ तोहफ़ा तुम्हारे लिए लायी हूं और वह मेरा दिल है। क्या तुम उसे मेरे हाथ से क़बूल करोगे? मसऊद अचम्भे से ताकता रह गया, मगर जब मलिका की आंखें मुहब्बत के नशे में डूबी हुई पायीं तो चाव के मारे

उठा और उसे सीने से लगाकर बोला– मैं तो मुद्दत से तुम्हारी बर्छी की नोक का घायल हूं , मेरी क़िस्मत है कि आज तुम मरहम रखने आयी हो।

6

मुल्के जन्नतनिशां अब आज़ादी और खुशहाली का घर है। मलिका शेर अफ़गान को अभी गद्दी पर बैठे साल भर से ज़्यादा नहीं गुजरा, मगर सल्तनत का कारबार बहुत अच्छी तरह और बड़ी खूबी से चल रहा है और इस बड़े काम में उसका शौहर मसऊद, जो अभी तक फ़क़ीर मख़मूर के नाम से मशहूर है, उसका सलाहकार और मददगार है ।

रात का वक़्त था, शाही दरबार सजा हुआ था, बड़े–बड़े वज़ीर अपने पद के अनुसार बैठे हुए थे और नौकर ज़र्क–बर्क़ वर्दियां पहने हाथ बांधे खड़े थे कि एक ख़िदमतगार ने आकर अर्ज़ की–दोनों जहान की मलिका, एक ग़रीब औरत बाहर खड़ी है और आपके क़दमों का बोसा लेने की गुज़ारिश करती है। दरबारी चौंके और मलिका ने ताज्जुब–भरे लहजे में कहा–अन्दर हाज़िर करो। ख़िदमतगार बाहर चला गया और ज़रा देर में एक बुढ़िया लाठी टेकती हुई आयी और अपनी पिटारी से एक जड़ाऊ ताज निकाल कर बोली– तुम लोग इसे ले लो, अब यह मेरे किसी काम का नहीं रहा। मियां ने मरते वक़्त इसे मसऊद को देकर कहा था कि तुम इसके मालिक हो, मगर अपने जिगर के टुकड़े मसऊद को कहां ढूंढूं ? रोते–रोते अंधी हो गयी, सारी दुनिया की ख़ाक छानी, मगर उसका कहीं पता न लगा। अब जिन्दगी से तंग आ गयी हूं, जीकर क्या क़रूंगी ? यह अमानत मेरे पास है, जिसका जी चाहे, ले ले ।

दरबार में सन्नाटा छा गया । लोग हैरत के मारे मूरत–से बन गये थे कि जैसे एक जादूगर था जो उंगली के इशारे से सब का दम बन्द किये हुए था। यकायक मसऊद अपनी जगह से उठा और रोता हुआ जाकर रिन्दा के पैरों पर गिर पड़ा। रिन्दा अपने जिगर के टुकड़े को देखते ही पहचान गयी, उसे छाती से लगा लिया और जड़ाऊ ताज उसके सर पर रखकर बोली–साहबो, यही मेरा प्यारा मसऊद और शाहे बामुराद का बेटा है, तुम लोग इसकी रिआया हो, यह ताज इसका है, यह मुल्क इसका है और सारी खिलक़त इसकी है। आज से वह अपने मुल्क का बादशाह है अपनी क़ौम का ख़ादिम।

दरबार में क़यामत का शोर मचने लगा, दरबारी उठे और मसऊद को हाथों हाथ ले जाकर तख़्त पर मलिका शेर अफ़गन के बग़ल में बिठा

दिया। भेंटे दी जाने लगीं, सलामियां दग़ने लगीं, नफ़ीरियों ने खुशी का गीत गाया और बाजों ने जीत का शोर मचाया। मगर जब जोश की यहां खुशी ज़रा कम हुई और लोगों ने रिन्दा को देखा तो वह मर गयी थीं। आरजूओं के पूरे होते ही जान निकल गयी। गोया आरजूएं रूह बनकर उसके मिट्टी के तन को जिन्दा रखे हुए थीं।

❑ ❑

यही मेरा वतन है

आज पूरे साठ बरस के बाद मुझे अपने वतन, प्यारे वतन का दर्शन नसीब हुआ। जिस वक़्त मैं अपने प्यारे देश से विदा हुआ और क़िस्मत मुझे पच्छिम की तरफ़ ले चली, मेरी उठती जवानी थी। मेरी रगों में ताज़ा खून दौड़ता था और सीना उमंगों और बड़े–बड़े इरादों से भरा हुआ था। मुझे प्यारे हिन्दुस्तान में किसी ज़ालिम की सख़्तियों और इंसाफ़ के ज़बर्दस्त हाथों ने अलग नहीं किया था। नहीं, ज़ालिम का जुल्म और क़ानून की सख़्तियां मुझसे जो चाहें करा सकती है मगर मेरा वतन मुझसे नहीं छुड़ा सकतीं। यह मेरे बुलंद इरादे और बड़े–बड़े मंसूबे थे जिन्होंने मुझे देश निकाला दिया। मैंने अमरीका में खूब व्यापार किया, खूब दौलत कमायी और खूब ऐश किये। भाग्य में बीवी भी ऐसी पायी जो अपने रूप में बेजोड़ थी, जिसकी खूबसूरती का चर्चा सारे अमेरिका में फैला हुआ था और जिसके दिल में किसी ऐसे ख़्याल की गुंजाइश भी न थी जिसका मुझसे संबंध न हो। मैं उस पर दिलोजान से न्यौछावर था और वह मेरे लिए सब कुछ थी। मेरे पांच बेटे हुए, सुन्दर, हृष्ट–पुष्ट और नेक, जिन्होंने व्यापार को और भी चमकाया और जिनके भोले, नन्हें बच्चे उस वक़्त मेरी गोद में बैठे हुए थे जब मैंने प्यारी मातृभूमि का अंतिम दर्शन करने के लिए क़दम उठाया। मैंने बेशूमार दौलत, वफ़ादार बीवी, सपूत बेटे और प्यारे–प्यारे जिगर के टुकड़े, ऐसी–ऐसी अनमोल नेमतें छोड़ दीं इसलिए भारत माता अंतिम दर्शन कर लूं। मैं बहुत बुड्ढा हो गया था। दस और हों तो पूरे सौ बरस का हो जाऊं, और अब अगर मेरे दिल में कोई आरजू बाक़ी है तो यही कि अपने देश की ख़ाक में मिल जाऊं। यह आरजू कुछ आज की मेरे मन में पैदा नहीं हुई है, उस वक़्त भी थी जब कि मेरी बीवी अपनी मीठी

बातों और नाज़ुक अदाओं से मेरा दिल खुश किया करती थी। जब कि मेरे नौजवान बेटे सवेरे आकर अपने बूढ़े बाप को अदब से सलाम करते थे, उस वक़्त भी मेरे जिगर में एक कांटा–सा खटकता था और वह कांटा यह था कि मैं यहां अपने देश में निर्वासित हूं। यह देश मेरा नहीं है, मैं इस देश का नहीं हूं। धन मेरा था, बीवी मेरी थी, लड़के मेरे थे और जायदादें मेरी थीं, मगर जाने क्यों मुझे रह रहकर अपनी मातृभूमि के टूटे–फूटे झोंपड़े, चार–छः बीघा मौरूसी ज़मीन और बचपन के लंगोटिया यारों की याद सताया करती थी और अक्सर खुशियों की धूमधम में भी यह ख़्याल चुटकी लिया करता किं काश अपने देश में होता ।

मगर जिस वक्त बम्बई में जहाज से उतरा और काले कोट–पतलून पहने, टुटी–फूटी अंग्रेजी बोलते मल्लाह देखे, फिर अंग्रेजी दुकानें, ट्रामवे और मोटर–गाड़ियां नजर आयी, फिर रबड़वाले पहियों और मुंह में चुरूट दाबे आदमियों से मुठभेड़ हुई, फिर रेल का स्टेशन और रेल पर सवार होकर अपने गांव को चला, प्यारे गांव को जो हरी–भरी पहाड़ियों के बीच में आबाद था, तो मेरी आंखों में आंसू भर आये। मैं खूब रोया, क्योंकि यह मेरा प्यारा देश न था, यह वो देश न था जिसके दर्शन की लालसा हमेशा मेरे दिल में लहरें लिया करती थीं । यह कोई और देश था । यह अमरीका था, इंग्लिस्तान था, मगर प्यारा भारत नहीं ।

रेलगाड़ी जंगलों, पहाड़ों, नदियों और मैदानों को पार करके मेरे प्यारे गांव के पास पहुंची जो किसी जमाने में फूल–पत्तों की बहुतायत और नदी–नालों को पचुरता में स्वर्ग से होड़ करता था। मैं गाड़ी से उतरा तो मेरा दिल उछल रहा था– अब अपना प्यारा घर देखूंगा, अपने बचपन के प्यारे साथियों से मिलूंगा। मुझे उस वक्त यह बिल्कुल याद न रहा कि मैं नब्बे बरस का बूढ़ा आदमी हूं। ज्यों–ज्यों मैं गांव के पास पहुंचता था, मेरे क़दम जल्द–जल्द उठते थे और दिल में एक ऐसी खुशी लहरें मार रही थी जिसे बयान नहीं किया जा सकता। हर चीज पर आंखें फाड़–फाड़कर निगाह डालता अहा, यह वो नाला है जिसमें हम रोज घोड़े नहलाते और खुद गोते लगाते थे मगर अब इसके दोनों तरफ कांटेदार तारों की चारदीवारी खिंची हुई थी और सामने एक बंगला था जिसमें दो–तीन अंग्रेज़ बंदूकें लिये इध्र–उध्र ताक रहे थे। नाले में नहाने या नहलाने की सख्त मनाही थी। गांव में गया और आंखें बचपन के साथियों को ढूंढ़ने लगी मगर अफ़सोस वह सब मौत का निवाला बन चुके थे और मेरा टूटा–फूटा झोपड़ा जिसकी गोद में बरसों तक खेला था, जहां बचपन और

बेफ़िक्रियों के मजे लूटे थे, जिसका नक्शा अभी तक आंखों में फिर रहा है, वह अब एक मिट्टी का ढेर बन गया था। जगह ग़ैर–आबाद न थी। सैकड़ों आदमी चलते–फिरते नजर आये, जो अदालत और कलक्टरी और थाने–पुलिस की बाते कर रहे थे। उनके चेहरे बेजान और फ़िक्र में डूबे हुए थे और वह सब दुनिया की परेशानियों से टूटे हुए मालूम होते थे। मेरे साथियों के से हृष्ट–पुष्ट, सुन्दर, गोरे–चिट्टे नौजवान कहीं न दिखाई दिये। वह अखाड़ा जिसकी मेरे हाथों ने बुनियाद डाली थी, वहां अब एक टूटा–फूटा स्कूल था और उसमें गिनती के बीमार शक्ल सूरत के बच्चे जिनके चेहरों पर भूख लिखी थी, चिथड़े लगाये बैठे ऊंघ रहे थे। नहीं, यह मेरा देश नहीं है। यह देश देखने के लिए मैं इतनी दूर से नहीं आया। यह कोई और देश है, मेरा प्यारा देश नहीं है।

उस बरगद के पेड़ की तरफ दौड़ा जिसकी सुहानी छाया में हमने बचपन के मज़े लूटे थे, जो हमारे बचपन का हिंडोला और जवानी की आरामगाह था। इस प्यारे बरगद को देखते ही रोना–सा आने लगा और ऐसी हसरतभरी, तड़पानेवाली और दर्दनाक यादें ताजी हो गयी कि घंटों ज़मीन पर बैठकर रोता रहा। यही प्यारा बरगद है जिसकी फुनगियों पर हम चढ़ जाते थे, जिसकी जटाएं हमारा झुला थीं और जिसके फल हमें सारी दुनिया की मिठाईयों से ज्यादा मजेदार और मीठे मालूम होते थे। वह मेरे गले में बांहें डालकर खेलनेवाले हमजोली जो कभी रूठते थे, कभी मनाते थे, वह कहां गये ? आह, मैं बेघरबार मुसाफिर क्या अब अकेला हूं? क्या मेरा कोई साथी नहीं। इस बरगद के पास अब थाना और पेड़ के नीचे एक कुर्सी पर कोई लाल पगड़ी बांधे बैठा हुआ था । उसके आसपास दस–बीस और लाल पगड़ीवाले हाथ बांधे खड़े थे और एक अधनंगा अकाल आदमी जिस पर अभी–अभी चाबुकों की बौछार हुई थी, पड़ा सिसक रहा था। मुझे ख़्याल आया, यह मेरा प्यारा देश नहीं है, यह कोई और देश है, यह यूरोप है, अमरीका है, मगर मेरा प्यारा देश नहीं है, हरगिज नहीं।

इधर से निराश होकर मैं उस चौपाल की ओर चला जहां शाम को पिता जी गांव के और बड़े–बूढ़ों के साथ हुक्का पीते और हंसी–दिल्लगी करते थे। हम भी उस टाट पर कलाबाजियां खाया करते। कभी–कभी वहां पंचायत भी बैठती थी जिसके सरपंच हमेशा पिता जी होते थे। इसी चौपाल से लगी हुई एक गोशाला थी जहां गांव भर की गायें रक्खी जाती थी और हम यहीं बछड़ों के साथ कुलेलें किया करते थे। अफ़सोस, अब इस चौपाल

का पता न था। वहां अब गांव के टीका लगाने का स्टेशन और एक डाकखाना था। उन दिनों इसी चौपाल से लगा हुआ एक कोल्हाड़ा था जहां जाड़े के दिनों में ईख पेरी जाती थी और गुड़ की महक से दिमाग तर हो जाता था। हम और हमारे हमजोली घंटों गंडेरियों के इंतजार में बैठे रहते थे और गंडेरियां काटनेवाले मजदूरों के हाथों की तेजी पर अचरज करते थे, जहां सैकड़ों बार मैंने कच्चा रस और पक्का दूध मिलाकर पिया था। यहां आसपास के घरों से औरतें और बच्चे अपने–अपने घड़े लेकर आते और उन्हें रस से भरवाकर ले जाते। अफसोस, वह कोल्हू अभी ज्यौं के त्यौं गड़े हुए है मगर देखो, कोल्हाड़े की जगह पर अब एक सन लपेटनेवाली मशीन है और उसके सामने एक तंबोली और सिगरेट की दुकान है। इन दिल को छलनी करने वाले दृश्यों से दुःखी होकर मैंने एक आदमी से जो सूरत से शरीफ नजर आता था, कहा– बाबा, मैं परदेशी मुसाफिर हूं , रात भर पड़े रहने के लिए मुझे जगह दे दो। इस आदमी ने मुझे सर से पैर तक घूरकर देखा और बोला –आगे जाओ, यहां जगह नहीं है। मैं आगे गया और यहां से फिर हुक्म मिला–आगे जाओ। पांचवी बार सवाल करने पर एक साहब ने मुठ्ठी भर चने मेरे हाथ पर रख दिये। चने मेरे हाथ से छूटकर गिर पड़े और आंखों से आंसू बहने लगे। हाय, यह मेरा प्यारा देश नहीं है, यह कोई और देश है। यह हमारा मेहमान और मुसाफिर की आवभगत करनेवाला प्यारा देश नहीं, हरगिज नहीं।

मैंने एक सिगरेट की डिबिया ली और एक सूनसान जगह पर बैठ कर बीते दिनों की याद करने लगा कि यकायक मुझे उस धर्मशाला का ख़्याल आया जो मेरे परदेश जाते वक्त बन रहा था। मैं उधर की तरफ लपका कि रात किसी तरह वहीं काटूं , मगर अफसोस, हाय अफसोस, धर्मशाला की इमारत ज्यों की त्यौं थी लेकिन उसमें गरीब मुसाफिरों के रहने के लिए जगह न थी। शराब और शराबखारी, जुआ और बदचलनी का वहां अड्डा था। यह हालत देखकर बरबस दिल से एक ठंडी आह निकली, मैं जोर से चीख उठा –नहीं–नहीं और हजार बार नहीं यह मेरा वतन, मेरा प्यारा देश, मेरा प्यारा भारत देश नहीं है। यह कोई और देश है। यह यरोप है, अमरीका है, मगर भारत हरगिज नहीं।

अधेरी रात थी । गीदड़ और कुत्ते अपने राग अलाप रहे थे। मैं दर्दभरा दिल लिये उसी नाले के किनारे जा कर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करूं ? क्या फिर अपने प्यारे बच्चों के पास लौट जाऊं और अपनी नामुराद मिट्टी अमरीका की खाक में मिलाऊं ? अब तो मेरा कोई

वतन न था, पहले मैं वतन से अलग जरूर था मगर प्यारे वतन की याद दिल में बनी हुई थी। अब बेवतन हूं, मेरा कोई वतन नहीं। इसी सोच–विचार में बहुत देर तक चुपचाप घुटनों में सर दिये बैठा रहा। रात आंखों की आंखों में कट गयी, घडियाल ने तीन बजाये और किसी के गाने की आवाज कानों में आयी। दिल ने गुदगदाया, यह तो वतन का नग्मा है, अपने देश का राग है। मैं झट उठ खड़ा हुआ। क्या देखता हूं कि पन्द्रह–बीस औरतें, बूढ़ी, कमजोर, सफ़ेद धेतियां पहने, हाथों में लोटे लिये, स्नान को जा रही है और गाती जाती है–

प्रभु, मेरे अवगुन चित न धरो

इस मादक और तड़पा देनेवाले राग से मेरे दिल की जो हालत हुई उसका बयान करना मुश्किल है। मैंने अमरिका की चंचल से चंचल, हंसमुख से हंसमुख सुन्दरियों की अलाप सुनी थी और बहुत बार उनकी जबानों से मुहब्बत और प्यार के बोल सुने थे जो मोहक गीतों से भी ज्यादा मीठे थे। मैंने प्यारे बच्चों के अधूरे बोलों और तोतली बानी का आनन्द उठाया था। मैंने सुरीली चिड़ियों का चहचहाना सुना था। मगर जो लुत्फ़, जो मजा, जो आनन्द मुझे इस गीत में आया वह जिन्दगी में कभी और हासिल न हुआ था। मैंने खुद गुनगुनाना शुरू किया–

प्रभु, मेरे अवगुन चित न धरो

तन्मय हो रहा था कि फिर मुझे बहुत से आदमियों की बोलचाल सुनायी पड़ी और कुछ लोग हाथों में पीतल के कमंडल लिये शिव शिव, हर हर, गंगे गंगे, नारायण–नारायण कहते हुए दिखाई दिये। मेरे दिल ने फिर गुदगुदाया, यह तो मेरे देश, प्यारे देश की बातें है। मारे खुशी के दिल बाग़–बाग़ हो गया। मैं इन आदमियों के साथ हो लिया और एक दो तीन चार पांच छः मील पहाड़ी रास्ता पार करने के बाद हम उस नदी के किनारे पहुंचे जिसका नाम पवित्र है, जिसकी लहरों में डुबकी लगाना ओर जिसकी गोद मे मरना हर हिन्दू सबसे बड़ा पुण्य समझता है। गंगा मेरे प्यारे गांव से छः सात मील पर बहती थी और किसी ज़माने में सुबह के वक़्त घोड़े पर चढ़कर गंगामाता के दर्शन को आया करता था। उनके दर्शन की कामना मेरे दिल में हमेशा थी। यहां मैंने हज़ारों आदमियों को इस सर्द, ठिठुरते हुए पानी में डुबकी लगाते देखा। कुछ लोग बालु पर बैठे गायत्री मंत्रा जप रहे थे। कुछ लोग हवन करने में लग हुए थे। कुछ लोग माथे पर टीके लगा रहे थे। कुछ और लोग वेदमंत्र सस्वर पढ़ रहे थे। मेरे दिल ने गुदगुदाया और मैं ज़ोर से कह उठा– हां–हां, यही मेरा देश है,

यही मेरा प्यारा वतन है, यही मेरा भारत है। और इसी के दर्शन की, इसी की मिट्टी में मिल जाने की आरजू मेरे दिल में थी।

मैं खुशी में पागल हो रहा था। मैंने अपने पुराना कोट और पतलून उतार फेंका और जाकर गंगा माता की गोद में गिर पड़ा, जैसे कोई नामसझ, भोला–भाला बच्चा दिन भर पराये लोगों के साथ रहने के बाद शाम को अपनी प्यारी मां की गोद में दौड़कर चला आये, उसकी छाती से चिपट जाये। हां, अब अपने देश में हूं। यह मेरा प्यारा वतन है, यह लोग मेरे भाई है, गंगा मेरी माता है।

मैनें ठीक गंगाजी के किनारे एक छोटी–सी झोपड़ी बनवा ली है और अब मुझे सिवाय रामनाम जपने के और कोई काम नहीं। मैं रोज शाम–सवेरे गंगा–स्नान करता हूं और यह मेरी लालसा है कि इसी जगह मेरा दम निकले और मेरी हड्डियां गंगामाता की लहरों की भेंट चढ़ें।

मेरे लड़के और मेरी बीवी मुझे बार–बार बुलाते है मगर अब मैं यह गंगा का किनारा और यह प्यारा देश छोड़कर वहां नहीं जा सकता। मैं अपनी मिट्टी गंगाजी को सौपूंगा। अब दुनिया की कोई इच्छा, कोई आकांक्षा मुझे यहां से नहीं हटा सकती क्योंकि यह मेरा प्यारा देश, मेरी प्यारी मातृभूमि है और मेरी लालसा है कि मैं अपने देश में मरूं।

❑ ❑

शोक का पुरस्कार

आज तीन दिन गुजर गये। शाम का वक्त था। मैं युनिवर्सिटी हॉल से खुश–खुश चला आ रहा था। मेरे सैकड़ों दोस्त मुझे बधइयां दे रहे थे। मारे खुशी के मेरी बांछें खिली जाती थीं। मेरी जिन्दगी की सबसे प्यारी आरजू कि मैं एम. ए. पास हो जाऊं, पूरी हो गयी थी और ऐसी खूबी से जिसकी मुझे तनिक भी आशा न थी और मेरा नम्बर अव्वल था। वाइस चान्सलर साहब ने खुद मुझसे हाथ मिलाया था और मुस्कराकर कहा था कि भगवान तुम्हें और भी बड़े कामों की शक्ति दे। मेरी खुशी की कोई सीमा न थी। मैं नौजवान था, सुन्दर था, स्वस्थ था, रूपये–पैसे की न मुझे इच्छा थी और न कुछ कमी, मां–बाप बहुत कुछ छोड़ गये थे। दुनिया में सच्ची खुशी पाने के लिए जिन चीजों की जरूरत है, वह सब मुझे प्राप्त थीं। और सबसे बढ़कर पहलू में एक हौसलामन्द दिल था जो ख्याति प्राप्त करने के लिए अधीर हो रहा था।

घर आया, दोस्तों ने यहां भी पीछा न छोड़ा, दावत की ठहरी। दोस्तों की खातिर–तवाजों में बारह बज गये, लेटा तो बरबस ख़्याल मिस लीलावती की तरफ जा पहुंचा जो मेरे पड़ोस में रहती थी और जिसने मेरे साथ बी. ए. का डिप्लोमा हासिल किया था। भाग्यशाली होगा वह व्यक्ति जो मिस लीला को ब्याहेगा, कैसी सुन्दर है! कितना मीठा गला है ! कैसा

हंसमुख स्वभाव ! मैं कभी–कभी उसके यहां प्रोफेसर साहब से दर्शनशास्त्र में सहायता लेने के लिए जाया करता था। वह दिन शुभ होता था जब प्रोफेसर साहब घर पर न मिलते थे। मिस लीला मेरे साथ बड़े तपाक से पेश आती और मुझे ऐसा मालूम होता था कि में ईसा मसीह की शरण में आ जाऊं तो उसे मुझे अपना पति बना लेने में आपत्ति न होगी। वह शेली, बायरन और कीट्स की प्रेमी थी और मेरी रूचि भी बिल्कुल उसी के समान थी। हम जब अकेले होते तो अक्सर प्रेम और प्रेम दर्शन पर बातें करने लगते और उसके मुहं से भावों से डूबी हुई बातें सुन–सुनकर मेरे दिल में गुदगुदी पैदा होने लगती थी। मगर अफसोस, मैं अपना मालिक न था। मेरी शादी एक ऊंचे घराने में कर दी गयी थी और अगरचे मैंने अब तक अपनी बीवी की सूरत भी न देखी थी मगर मुझे पूरा–पूरा विश्वास था कि मुझे उसकी संगत में वह आनन्द नहीं मिल सकता जो मिस लीला की संगत में सम्भव है। शादी हुए दो साल हो चुके थे मगर उसने मेरे पास एक खत भी न लिखा था। मैंने दो तीन ख़त लिखे भी, मगर किसी का जवाब न मिला। इससे मुझे शक हो गया था कि उसकी तालीम भी यों ही–सी है।

आह! क्या मैं इसी लड़की के साथ जिन्दगी बसर करने पर मजबूर हूंगा ? ..... इस सवाल ने मेरे उन तमाम हवाई किलों को ढा दिया जो मैंने अभी–अभी बनाये थे। क्या मैं मिस लीला से हमेशा के लिए हाथ धो लूं ? नामुमकिन है। मैं कुमुदिनी को छोड़ दूंगा, मैं अपने घरवालों से नाता तोड़ लूंगा, मैं बदनाम हूंगा, मगर मिस लीला को जरूर अपना बनाऊंगा।

इन्हीं ख़्यालों के असर में मैंने अपनी डायरी लिखी और उसे मेज पर खुला छोड़कर बिस्तर पर लेटा रहा और सोचते–सोचते सो गया ।

सबेरे उठकर देखता हूं तो बाबू निरंजनदास मेरे सामने कुर्सी पर बैठे हैं। उनके हाथ में डायरी थी जिसे वह ध्यानपूर्वक पढ़ रहे थे। उन्हें देखते ही मैं बड़े चाव से लिपट गया। अफसोस, अब उस देवोपम स्वभाव वाले नौजवान की सूरत देखनी न नसीब होगी। अचानक मौत ने उसे हमेशा के लिए हमसे अलग कर लिया। कुमुदिनी के सगे भाई थे, बहुत स्वस्थ, सुन्दर और हंसमुख, उम्र मुझसे दो चार साल ही ज्यादा थी, ऊंचे पद पर नियुक्त थे, कुछ दिनों से इसी शहर में तबदील होकर आ गये थे। मेरी और उनकी गाढ़ी दोस्ती हो गयी थी। मैंने पूछा– क्या तुमने मेरी डायरी पढ़ ली ?

निरंजन–हां

मैं– मगर कुमुदिनी से कुछ न कहना।

निरंजन– बहुत अच्छा, न कहूंगा।

मैं– इस वक्त किसी सोच में हो। मेरा डिप्लोमा देखा ?

निरंजन–घर से ख़त आया है, पिताजी बीमार है, दो–तीन दिन में जाने वाला हूं।

मैं –शौक से जाइए, ईश्वर उन्हें जल्द स्वस्थ करे।

निरंजन– तुम भी चलोगे ? न मालूम कैसा पड़े, कैसा न पड़े ।

मैं – मुझे तो इस वक्त माफ कर दो।

निरंजनदास यह कहकर चले गये। मैंने हमाजत बनायी, कपड़े बदले और मिस लीलावती से मिलने का चाव मन में लेकर चला। वहां जाकर देखा तो ताला पड़ा हुआ है। मालूम हुआ कि मिस साहिबा की तबीयत दो–तीन दिन से खराब थी। आबहवा बदलने के लिए नैनीताल चली गयी है। अफसोस, मैं हाथ मलकर रह गया। क्या लीला मुझसे नाराज थी ? उसने मुझे क्यों खबर नहीं दी। लीला, क्या तू बेवफा है, तुझसे बेवफाई की उम्मीद न थी। फौरन पक्का इरादा कर लिया कि आज की डाक से नैनीताल चल दूं। मगर घर आया तो लीला का ख़त मिला। कांपते हुए हाथों से खोला, लिखा था– मैं बीमार हूं मेरे जीने की कोई उम्मीद नहीं है, डाक्टर कहते है कि प्लेग है। जब तक तुम आओगे, शायद मेरा किस्सा तमाम हो जायेगा। आखिरी वक्त तुमसे न मिलने का सख्त सदमा है। मेरी याद दिल में कायम रखना। मुझे सख्त अफसोस है कि तुमसे मिलकर नहीं आयी। मेरा कसूर माफ करना और अभागिनी लीला को भूला मत देना। ख़त मेरे हाथ से छुटकर गिर पड़ा। दुनियां आंखों में अंधेरी हो गयी, मुंह से एक ठण्डी आह निकली। बिना एक क्षण गंवाये मैंने बिस्तर बांध और नैनीताल चलने के लिए तैयार हो गया। घर से निकला ही था कि प्रोफेसर बोस से मुलाकात हो गयी। कॉलेज से चले आ रहे थे, चेहरे पर शोक लिखा हुआ था। मुझे देखते ही उन्होंने जेब से एक तार निकालकर मेरे सामने फेंक दिया। मेरा कलेजा धक् से हो गया। आंखों में अंधेरा छा गया, तार कौन उठाता है। और हाय मारकर बैठ गया। लीला, तू इतनी जल्दी मुझसे जुदा हो गयी।

2

मैं रोता हुआ घर आया और चारपाई पर मुंह ढ़ांपकर खूब रोया। नैनीताल जाने का इरादा खत्म हो गया। दस–बारह दिन तक मैं उन्माद की–सी दशा में इधर–उधर घूमता रहा। दोस्तों की सलाह हुई की कुछ रोज के लिए कहीं घूमने चले जाओ। मेरे दिल में भी यह बात जम गयी। निकल खड़ा हुआ और दो महीनों तक विंधयाचल पारसनाथ वगैरह पहाड़ियों में आवारा फिरता रहा। ज्यों–त्यों करके नई–नई जगहों और दृश्यों की सैर से तबीयत को जरा तस्कीन हुई। मैं आबू में था जब मेरे नाम तार पहुंचा कि मैं कॉलेज की असिस्टेण्ट प्रोफेसरी के लिए चुन लिया गया हूं। जी तो न चाहता था कि फिर इस शहर में आऊ, मगर प्रिन्सिपल के खत ने मजबूर कर दिया। लाचार, लौटा अपने काम में लग गया। जिन्दादिली नाम को न बाकी रही थी। दोस्तों की संगत से भागता और हंसी मजाक से चिढ़ मालूम होती।

एक रोज शाम के वक्त मैं अपने अंधेरे कमरे में लेटा हुआ कल्पना लोक की सैर कर रहा था कि सामनेवाले मकान से गाने की आवाज आयी। आह, क्या आवाज थी, तीर की तरह दिल में चुभी जाती थी, स्वर कितना करूण था ! इस वक्त मुझे अन्दाजा हुआ कि गाने ने क्या असर होता है। तमाम रोंगटे खड़े हो गये, कलेजा मसोसने लगा और दिल पर एक अजीब वेदना–सी छा गयी। आंखों से आंसू बहने लगे। हाय, यह लीला का प्यारा गीत था–

पिया मिलन है कठिन बावरी ।

मुझ से जब्त न हो सका, मैं एक उम्मीद की सी दशा में उठा और जाकर सामने वालें मकान का दरवाजा खटखटाया। मुझे उस वक्त यह चेतना न रही कि एक अजनबी आदमी के मकान पर आकर खड़े हो जाना और उसके एकांत में विघन डालना पहले दर्जे की असभ्यता है ।

3

एक बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया और मुझे खड़े देखकर लपकी हुई अन्दर गयी। मैं भी उसके साथ चला गया। देहलीज तय करते ही एक बड़े कमरे पहुंचा। उस पर एक सफेद फर्श बिछा हुआ था। गावत–किये भी रखे थे। दीवारों पर खूबसरत तसवीरें लटक रही थी और एक सोलह–सत्रह साल का सुन्दर नौजवान जिसकी अभी मसें भीग रही थीं मसनद के करीब बैठा हुआ हारमोनियम पर गा रहा था। मैं क़सम खा

सकता हूं कि ऐसा सुन्दर नौजवान मेरी नजर से कभी नहीं गुजरा। चाल–ढाल से सिख मालूम होता था। मुझे देखते ही चौंक पड़ा और हारमोनियम छोड़कर खड़ा हो गया। शर्म से सिर झुका लिया और कुछ घबराया हुआ–सा नजर आने लगा। मैंने कहा–माफ कीजिएगा, मैंने आपको बड़ी तकलीफ़ दी। आप इस फन के उस्ताद मालूम होते है। खासकर जो चीज आप गा रहे थे, वह मुझे पसन्द है।

नौजवान ने अपनी बड़ी–बड़ी आंखों से मेरी तरफ देखा और सर नीचा कर लिया और होठों ही में कुछ अपने नौसिखियेपन की बात कही। मैंने फिर पूछा– आप यहां कब से है ?

नौजवान–तीन महीने के करीब होता है।

मैं –आपका शुभ नाम।

नौजवान–मुझे मेहर सिंह कहते है।

मैं बैठ गया और बहुत गुस्ताखाना बेतकल्लुफी से मेहर सिंह का हाथ पकड़कर बिठा दिया और फिर माफी मांगी। उस उस वक्त की बातचीत से मालूम हुआ कि वह पंजाब का रहने वाला है और यहां पढ़ने के लिए आया हुआ है। शायद डाक्टरों ने सलाह दी कि पंजाब की आबहवा उसके लिए ठीक नहीं है। मैं दिल में तो झेंपा कि एक स्कूल के लड़के के साथ बैठकर ऐसी बेतकल्लूफी से बाते कर रहा हूं , मगर संगीत के प्रेम ने इस ख्याल को रहने न दिया। रस्मी परिचय के बाद मैंने फिर प्रार्थना की कि वही चीजे छेड़िये। मेहर सिंह ने आंखें नीचे करके जवाब दिया कि मैं अभी बिलकुल नौसिखिया हूं।

मैं –यह तो आप अपनी जबान से कहिए।

मेहर सिंह–(झेंपकर) आप कुछ फरमायें, हारमोनियम हाजिर है।

मैं–मैं इस फन में बिलकुल कोरा हूं वर्ना आपकी फरमाइश जरूर पूरी करता ।

इसके बाद मैंने बहुत आग्रह किया मगर मेहर सिंह झेंपता ही रहा। मुझे स्वभावतः शिष्टाचार से घृणा है। हालांकि इस वक्त मुझे रूखा होने का कोई हक न था मगर जब मैंने देखा कि यह किसी तरह न मानेगा तो जरा रूखाई से बोला –खैर जाने दीजिए। मुझे अफसोस है कि मैंने आपका बहुत वक्त बर्बाद किया। माफ कीजिए। यह कहकर उठ खड़ा हुआ। मेरी रोनी सूरत देखकर शायद मेहर सिंह को उस वक्त तरस आ गया, उसने झेंपते हुए मेरा हाथ पकड़ लिया और बोला–आप तो नाराज हुए जाते हैं।

मैं–मुझे आपसे नाराज होने का कोई हक हासिल नहीं।

मेहर सिंह–अच्छा बैठ जाइए, मैं आपकी फरमाईश पूरी करूंगा। मगर मैं अभी बिलकुल अनाड़ी हूं।

मैं बैठ गया और मेहर सिंह ने हारमोनियम पर वही गीत अलापना शुरू किया –

पिया मिलन है कठिन बावरी ।

कैसी सुरीली तान थी, कैसी मीठी आवाज, कैसा बेचैन करने वाला भाव ! उसके गले में वह रस था जिसका बयान नहीं हो सकता। मैंने देखा कि गाते–गाते खुद उसकी आंखों में आंसू भर आये। मुझपर इस वक्त एक मोहक सपने की–सी दशा छायी हुई थी। एक बहुत मीठा, नाजुक, दर्दनाक असर, दिल पर हो रहा था जिसे बयान नहीं किया जा सकता। एक हरे–भरे मैदान का नक्शा आंखों के सामने खिंच गया और लीला, प्यारी लीला, उस मैदान पर बैठी हुई मेरी तरफ हसरतनाक आखों से ताक रही थी। मैंने एक लम्बी आह भरी और बिना कुछ कहे उठ खड़ा हुआ। इस वक्त मेहर सिंह ने मेरी तरफ ताका, उसकी आंखों में मोती के क़तरे डबडबायें हुए थे और बोला–कभी–कभी तशरीफ लाया कीजिएगा ।

मैंने सिर्फ इतना जवाब दिया –मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं ।

4

धीरे–धीरे मेरी यह हालत हो गयी कि जब तक मेहर सिंह के यहां जाकर दो–चार गाने न सुन लूं जी को चैन न आता। शाम हुई और मैं जा पहुंचा। कुछ देर तक गानों की बाहर लूटता और तब उसे पढ़ाता। ऐसे जहीन और समझदार लड़के को पढ़ाने में मुझे खास मजा आता था। मालूम होता था कि मेरी एक–एक बात उसके दिल पर नक्श हो रही है। जब तक मैं पढ़ाता वह पूरे जी–जान से कान लगाये बैठा रहता। जब उसे देखता, पढ़ने–लिखने में डूबा हुआ पाता। साल भर में अपने भगवान के दिये हुए जेहन ही बदौलत उसने अंग्रेजी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। मामूली चिठ्ठियां लिखने लगा और दूसरा साल गुजरते–गुजरते वह अपने स्कूल के कुल छात्रों से बाजी ले गया। जितने मुदर्रिस थे, सब उसकी अक्ल पर हैरत करते और सीध नेक–चलन ऐसा कि कभी झूठ–मूठ भी किसी ने उसकी शिकायत नहीं की। वह अपने सारे स्कूल की उम्मीद और रौनक था लेकिन बावजूद सिख होने के उसे

खेल–कूद में रूचि न थी। मैंने उसे कभी क्रिकेट में नहीं देखा। शाम होते ही सीधे घर चला आता और लिखने–पढ़ने में लग जाता।

मैं धीरे–धीरे उससे इतना हिल–मिल गया कि बजाय शिष्य के उसको अपना दोस्त समझने लगा। उम्र के लिहाज से उसकी समझ आश्चर्यजनक थी। देखने में 16–17 साल से ज्यादा न मालूम होता मगर जब कभी मैं रवानी में आकर दुर्बोध कवि–कल्पनाओं और कोमल भावों की उनके सामने व्याख्या करता तो मुझे उसकी भंगिमा से ऐसा मालूम होता कि एक–एक बारीकी से समझ रहा है। एक दिन मैंने उससे पूछा–मेहर सिंह, तुम्हारी शादी हो गयी ?

मेहर सिंह ने शरमाकर जवाब दिया–अभी नहीं।

मैं–तुम्हें कैसी औरत पसंद है ?

मेहर सिंह– मैं शादी करूंगा ही नहीं।

मैं–क्यों ?

मेहर सिंह–मुझ जैसे जाहिल गंवार के साथ शादी करना कोई औरत पसंद न करेगी।

मैं–बहुत कम ऐसे नौजवान होंगे जो तुमसे ज्यादा लायक हों या तुमसे ज्यादा समझ रखते हों।

मेहर सिंह ने मेरी तरफ अचम्भे से देखकर कहा–आप दिल्लगी करते है।

मैं–दिल्लगी नहीं, मैं सच कहता हूं। मुझे खुद आश्चर्य होता है कि इतने कम दिनों में तुमने इतनी योग्यता क्योंकर पैदा कर ली। अभी तुम्हें अंग्रेजी शुरू किये तीन बरस से ज्यादा नहीं हुए।

मेहर सिंह–क्या मैं किसी पढ़ी–लिखी लेडी को खुश रख सकूंगा ।

मैं–(जोश से) बेशक !

5

गर्मी का मौसम था। मैं हवा खाने शिमले गया हुआ था। मेहर सिंह भी मेरे साथ था। वहां मैं बीमार पड़ा। चेचक निकल आयी। तमाम जिस्म में फफोले पड़ गये। पीठ के बल चारपाई पर पड़ा रहता। उस वक्त मेहर सिंह ने मेरे साथ जो–जो एहसान किये वह मुझे हमेशा याद रहेंगे। डाक्टरों की सख्त मनाही थी कि वह मेरे कमरे में न आवे। मगर

मेहर सिंह आठों पहर मेरे ही पास बैठा रहता। मुझे खिलाता–पिलाता, उठाता–बिठाता। रात–दिन भर चारपाई के करीब बैठकर जागते रहना मेहर सिंह ही का काम था। सगा भाई भी इससे ज्यादा सेवा नहीं कर सकता था। एक महीना गुजर गया। मेरी हालत रोज–ब–रोज बिगड़ती जाती थी। एक रोज मैंने डाक्टर को मेहर सिंह से कहते हुआ सुना कि इनकी हालत नाजुक है। मुझे यकीन हो गया कि अब न बचूंगा, मगर मेहर सिंह कुछ ऐसी दृढ़ता से मेरी सेवा शुश्रुषा में लगा हुआ था कि जैसे यह मुझे जबर्दस्ती मौत के मुंह से बचा लेगा। एक रोज शाम के वक्त मैं कमरे में लेटा हुआ था कि किसी के सिसकी लेने की आवाज आयी । वहां मेहर सिंह को छोड़कर और कोई न था । मैंने पूछा –मेहर सिंह, मेहर सिंह, तुम रोते हो !

मेहर सिंह ने जब्त करके कहा –नहीं, रोऊं क्यों, और मेरी तरफ बड़ी दर्द–भरी आंखों से देखा।

मैं–तुम्हारे सिसकने की आवाज आयी।

मेहर सिंह–वह कुछ बात न थी। घर की याद आ गयी थी।

मैं–सच बोलो।

मेहर सिंह की आंखें फिर डबडबा आयी। उसने मेज पर से आइना उठाकर मेरे सामने रख दिया। हे नारायण ! मैं खुद अपने को पहचान न सका। चेहरा इतना ज्यादा बदल गया था। रंगत बजाय सुर्ख के सियाह हो रही थी और चेचक के बदनुमा दागों से सूरत बिगाड़ दी थी। अपनी यह बुरी हालत देखकर मुझसे भी जब्त न हो सका और आंखें डबडबा गयी। वह सौंदर्य जिस पर मुझे इतना गर्व था बिलकुल विदा हो गया था ।

6

मैं शिमले से वापस आने की तैयारी कर रहा था। मेहर सिंह उसी रोज मुझसे विदा होकर अपने घर चला गया था। मेरी तबीयत बहुत उचाट हो रही थी। असबाब सब बंध चुका था कि एक गाड़ी मेरे दरवाजे पर आकर रूकी और उसमें से कौन उतरा। मिस लीला ! मेरी आंखों को विश्वास न हो रहा था, चकित होकर ताकने लगा। मिस लीलावती ने आगे बढ़कर मुझे सलाम किया और हाथ मिलाने को बढ़ाया। मैंने भी बौखलाहट में हाथ बढ़ा दिया मगर अभी तक यकीन नहीं हुआ था कि मैं सपना देख

रहा हूं या यह हकीकत है। लीला के गालों पर वह लाली न थी न वह चुलबुलापन बल्कि वह बहुत गम्भीर और पीली–पीली सी हो रही थी। आखिर मेरी हैरत कम न होते देखकर उसने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा– तुम कैसे जेण्टिलमैन हो कि एक शरीफ लेडी को बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं देते !

मैंने अन्दर से कुर्सी लाकर उसके लिए रख दी। मगर अभी तक यही समझ रहा था कि सपना देख रहा हूं।

लीलावती ने कहा – शायद तुम मुझे भूल गये ।

मैं–भूल तो उम्र भर नहीं सकता मगर आंखों का एतबार नहीं आता।

लीला–तुम तो बिलकुल पहचाने नहीं जाते।

मैं– तुम भी तो वह नहीं रही। मगर आखिर यह भेद क्या है, क्या तुम स्वर्ग से लौट आयी ?

लीला–मैं तो नैनीताल में अपने मामा के यहां थी।

मैं–और वह चिठ्ठी मुझे किसने लिखी थी और तार किसने दिया था ?

लीला– मैंने ही।

मैं–क्यों ? तुमने यह मुझे धोखा क्यों दिया ? शायद तुम अन्दाजा नहीं कर सकतीं कि मैंने तुम्हारे शोक में कितनी पीड़ा सही है।

मुझे उस वक्त एक अनोखा गुस्सा आया– यह फिर मेरे सामने क्यों आ गयी ! मर गयी थी तो मरी ही रहती !

लीला–इससे एक गुर था, मगर यह बात तो फिर होती रहेंगी। आओ इस वक्त तुम्हें अपनी एक लेडी फ्रेण्ड से इण्ट्रोड्यूस कराऊं, वह तुमसे मिलने की बहुत इच्छुक है।

मैंने अचरज से पूछा–मुझसे मिलने की ! मगर लीलावती ने इसका कुछ जवाब न दिया और मेरा हाथ पकड़कर गाड़ी के सामने ले गयी। उसमें एक युवती हिन्दुस्तानी कपड़े पहने बैठी हुई थी। मुझे देखते ही उठ खड़ी हुई और हाथ बढ़ा दिया । मैंने लीला की तरफ़ सवाल करती हुई आंखों से देखा ।

लीला–क्या तुमने नहीं पहचाना ?

मैं–मुझे अफ़सोस है कि मैंने आपको कभी नहीं देखा और अगर देखा हो तो घूंघट की आड़ में क्योंकर पहचान सकता हूं।

लीला– यह तुम्हारी बीवी कुमुदिनी है !

मैंने आश्चर्य के स्वर में कहा– कुमुदिनी, यहां ?

लीला– कुमुदिनी मुंह खोल दो और अपने प्यारे पति का स्वागत करो।

कुमुदिनी के कांपते हुए हाथों से ज़रा–सा घूंघट उठाया। लीला ने सारा मुंह खौल दिया और ऐसा मालूम हुआ कि जैसे बादल से चांद निकल आया। मुझे ख़्याल आया, मैंने यह चेहरा कहीं देखा है ? कहां? अहा, उसकी नाक पर भी तो वही तिल है उंगुली में वही अंगूठी भी है।

लीला–क्या सोचते हो, अब पहचाना ?

मैं–मेरी कुछ अक्ल काम नहीं करती। हूबहू यही हुलिया मेरे एक प्यारे दोस्त मेहर सिंह का है !

लीला–(मुस्कराकर) तुम तो हमेशा निगाह के तेज़ बनते थे, इतना भी नहीं पहचान सकते !

मैं खुशी से फूल उठा–कुमुदिनी मेहर सिंह के भेस में ! मैंने उसी वक़्त उसे गले से लगा लिया और खुब दिल खोलकर प्यार किया। इन कुछ क्षणों में मुझे जो खुशी हासिल हुई उसके मुक़ाबले में ज़िन्दगी भर की खुशियां, हेच हैं। हम दोनों आलिंगन–पाश में बंधे हुए थे । कुमुदिनी, प्यारी कुमुदिनी के मुंह से आवाज़ न निकलती थी। हां, आंखों से आंसू जारी थे।

मिस लीला बाहर खड़ी कोमल आंखों से यह दृश्य देख रही थी। मैंने उसके हाथों को चूमकर कहा–लीला, तुम सच्ची देवी हो, जब तक जियेंगे तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे।

लीला के चेहरे पर एक हल्की–सी मुसकराहट दिखायी दी बोली–अब तो शायद तुम्हें मेरे शोक का काफ़ी पुरस्कार मिल गया ।

❑ ❑

सांसारिक प्रेम और देश प्रेम

शहर लन्दन के एक पुराने टूटे–फूटे होटल में जहां शाम ही से अंधेरा हो जाता है, जिस हिस्से में फ़ैशनेबुल लोग आना ही गुनाह समझते हैं और जहां जुआ, शराब–खोरी और बदचलनी के बड़े भयानक दृश्य हरदम आंख के सामने रहते हैं उस होटल में, उस बदचलनी के अखाड़े में इटली का नामवर देश–प्रेमी मैज़िनी ख़ामोश बैठा हुआ है। उसका सुन्दर चेहरा पीला है,आंखों से चिन्ता बरस रही है, होंठ सूखे हुए हैं और शायद महीनों से हजामत नहीं बनी । कपड़े मैले–कुचैले हैं । कोई व्यक्ति जो मैज़िनी को पहले से न जानता हो, उसे देखकर यह ख़्याल करने से नहीं रूक सकता कि हो न हो यह भी उन्हीं अभागे लोगों में है जो अपनी वासनाओं के गुलाम होकर ज़लील से ज़लील काम करते हैं ।

मैज़िनी अपने विचारों में डूबा हुआ है । आह बदनसीब क़ौम ! ऐ मज़लूम इटली ! क्या तेरी क़िस्मतें कभी न सुधरेंगी, क्या तेरे सैंकड़ों सपूतों का खून ज़रा भी रंग न लायेगा ! क्या तेरे देश से निकाले हुए हज़ारों जांनिसारों की आहों में ज़रा भी तासीर नहीं ! क्या तू अन्याय और अत्याचार और गुलामी के फंदे में हमेशा गिरफ़्तार रहेगी। शायद तुझसे अभी सुधरने की, स्वतन्त्र होने की योग्यता नहीं आयी। शायद मेरी क़िस्मत में कुछ दिनों और ज़िल्लत की बर्बादी झेलनी लिखी है। आज़ादी, हाय आज़ादी, तेरे लिए मैंने कैसे–कैसे दोस्त, जान से प्यारे दोस्त कुर्बान किये। कैसे–कैसे नौजवान, होनहार नौजवान, जिनकी मांएं और बीवियां आज उनकी क़ब्र पर आंसू बहा रही हैं और अपने कष्टों और आपदाओं से तंग आकर उनके वियोग के कष्ट में अभागे, आफ़त के मारे मैज़िनी को शाप दे रही हैं। कैसे–कैसे शेर दुश्मनों के सामने पीठ फेरना न जाने थे, क्या यह सब कुर्बानियां, यह सब भेंटें काफी नहीं है ? आज़ादी, तू ऐसी क़ीमती चीज़ है ! हां तो फिर मैं क्यों ज़िन्दा रहूं ? क्या यह देखने के लिए कि मेरा प्यारा वतन, मेरा प्यारा देश, धोखेबाज़, अत्याचारी दुश्मनों के पैरों तले रौंदा जाये, मेरे प्यारे भाई, मेरे प्यारे हमवतन, अत्याचार का शिकार बनें। नहीं मैं यह देखने को ज़िन्दा नहीं

रह सकता!

मैज़िनी इन्हीं ख़्यालों में डूबा हुआ था कि उसका दोस्त रफ़ेती जो उसके साथ निर्वासित किया गया था, इस कोठरी में दाखिल हुआ। उसके हाथ में एक बिस्कुट का टुकड़ा था। रफ़ेती उम्र में अपने दोस्त से दो–चार बरस छोटा था। भंगिमा से सज्जनता झलक रही थी। उसने मैज़िनी का कंध पकड़कर हिलाया और कहा–जोज़ेफ़, यह लो, कुछ खा लो।

मैज़िनी ने चौंक कर सर उठाया और बिस्कुट देखकर बोला–यह कहां से लाये ? तुम्हारे पास पैसे कहां थे ?

रफ़ेती–पहले खा लो फिर यह बातें पूछना, तुमने कल शाम से कुछ नहीं खाया है।

मैज़िनी– पहले यह बता दो, कहां से लाये। जेब में तम्बाकू का डिब्बा भी नज़र आता है। इतनी दौलत कहां हाथ लगी ?

रफ़ेती–पूछकर क्या करोगे ? वही अपना नया कोट जो मां ने भेजा था, गिरवी रख आया हूं।

मैज़िनी ने एक ठंडी सांस ली, आंखों से आंसू टप–टप ज़मीन पर गिर पड़ा। रोते हुए बोला– यह तुमने क्या हरकत की, क्रिसमस के दिन आने हैं, उस वक़्त क्या पहनोगे ? क्या इटली के एक लखपती व्यापारी का इकलौता बेटा क्रिसमस के दिन भी ऐसे ही फटे–पुराने कोट में बसर करेगा ? ऐं ?

रफ़ेती–क्यों, क्या उस वक़्त तक कुछ आमदनी न होगी, हम तुम दोनों नये जोड़े बनवायेंगे और अपने प्यारे देश की आने–वाली आज़ादी के नाम पर खुशियां मनायेंगे।

मैज़िनी– आमदनी की तो कोई सूरत नज़र नहीं आती। जो लेख मासिक पत्रिकाओं के लिए लिखे गये थे, वह वापस ही आ गये। घर से जो कुछ मिलता है, वह कब का खत्म हो चुका। अब और कौन–सा ज़रिया है।

रफ़ेती–अभी क्रिसमस को हफ्ता भर पड़ा है। अभी से उसकी क्या फ़िक करें। और अगर मान लो यही कोट पहना तो क्या ? तुमने नहीं मेरी बीमारी में डाक्टर की फ़ीस के लिए मैग्डलीन की अंगूठी बेच डाली थी ? मैं जल्दी ही यह बात उसे लिखने वाला हूं, देखना तम्हें कैसा बनाती हैं!

2

क्रिसमस का दिन है, लन्दन में चारों तरफ़ खुशियों की गर्म बाज़ारी है । छोटे–बड़े, अमीर–ग़रीब सब अपने–अपने घर खुशियां मना रहे हैं और अपने

अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर गिरजाघरों में जा रहे है। कोई उदास सूरत नजर नहीं आती। ऐसे वक़्त में मैज़िनी और रफ़ेती दोनों उसी छोटी–सी अंधेरी कोठरी में सर झुकाये ख़ामोश बैठे हैं। मैज़िनी ठण्डी आहें भर रहा है रफ़ेती रह–रह कर दरवाज़े पर आता है और बदमस्त शराबियों क़ो और दिनों से ज़्यादा बहकते और दीवानेपन की हरकतें करते देखकर अपनी ग़रीबी और मुहताजी की फ़िक्र दूर करना चाहता है। अफ़सोस ! इटली का सरताज जिसकी एक ललकार पर हज़ारों आदमी अपना खून बहाने के लिए तैयार हो जाते थे, आज ऐसा मुहताज हो रहा है कि उसे ख़ाने का ठिकाना नहीं। यहां तक कि आज सुबह से उसने एक सिगार भी नहीं पिया। तम्बाकू ही दुनिया की वह नेमत थी जिससे वह हाथ नहीं खींच सकता था और वह भी आज उसे नसीब न हुआ। मगर इस वक़्त उसे अपनी फ़िक्र नहीं रफ़ेती, नौजवान, खुशहाल और खूबसूरत होनहार रफ़ेती की फ़िक्र जी पर भारी हो रही है। वह पूछता है कि मुझे क्या हक़ है कि मैं एक ऐसे आदमी को अपने साथ ग़रीबी की तकलीफ़े झेलने पर मजबूर करूं जिसके स्वागत के लिए दुनिया की सब नेमते बांहें खोले खड़ी है।

इतने में एक चिठ्ठीरसा ने पूछा–जोज़ेफ़ मैज़िनी यहां कहीं रहता है ? अपनी चिठठी ले जा।

रफ़ेती ने खत ले लिया और खुशी के जोश से उछलकर बोला–जोज़ेफ़ यह लो मैण्डलीन का ख़त है।

मैज़िनी ने चौंककर ख़त ले लिया और बड़ी बेसब्री से खोला। लिफ़ाफ़ा खोलते ही थोड़े से बालों का एक गुच्छा गिर पड़ा, जो मैण्डलीन ने क्रिसमस के उपहार के रूप में भेजा था। मैज़िनी ने उस गुच्छा को चूमा और उसे उठाकर अपने सीने की जेब में खोंस लिया। ख़त में लिख़ा था –

माई डियर जोज़ेफ,

यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो। भगवान करे तुम्हें एक सौ क्रिसमस देखने नसीब हों। इस यादगार को हमेशा अपने पास रखना और ग़रीब मैण्डलीन को भूलना मत। मैं और क्या लिखूं। कलेजा मुंह को आया जाता है। हाय जोज़ेफ़, मेरे प्यारे, मेरे स्वामी, मेरे मालिक जोज़ेफ़, तू मुझे कब तक तड़पायेगा ! अब ज़ब्त नहीं होता। आंखों में आंसू उमड़ आते हैं। मैं तेरे साथ मुसींबते झेलूंगी, भुखों मरूंगी, यह सब मुझे गवारा है, मगर तुझसे जुदा रहना ग़वारा नहीं। तुझे क़सम है, तुझे अपने ईमान की क़सम है, तुझे अपने वतन की क़सम, तुझे मेरी क़सम, यहां आ जा, यह आंख तरस रही है, कब तुझे देखूंगी । क्रिसमस क़रीब है, मुझे क्या, जब तक ज़िन्दा हूं, तेरी हूं ।

3

मैण्डलीन का घर स्विटज़रलैण्ड में था। वह एक समृद्ध व्यापारी की बेटी थी और अनिद्य सुन्दरी। आन्तरिक सौन्दर्य में भी उसका जोड़ मिलन मुश्किल था। कितने ही अमीर और रईस लोग उसका पागलपन सर में रखते थे, मगर वह किसी को कुछ ख़्याल में न लाती थी। मैज़िनी जब इटली से भागा तो स्विटरलैण्ड में आकर शरण ली। मैण्डलीन उस वक़्त भोली–भाली, जवानी की गोद में खेल रही थी। मैज़िनी की हिम्मत और कुर्बानियों का तारीफ़े पहले ही सुन चुकी थी। कभी–कभी अपनी मां से साथ उसके यहां आने लगी और आपस का मिलना–जुलना जैसे–जैसे बढ़ा और मैज़िनी के भीतरी सौन्दर्य का ज्यों–ज्यों उसके दिल पर गहरा असर होता गया, उसकी मुहब्बत उसके दिल में पक्की होती गयी। यहां तक कि उसने एक दिन खुद लाज शर्म को किनारे रखकर मैज़िनी के पैरों पर सिर रख दिया और कहा–मुझे अपनी सेवा में स्वीकार कर लीजिए।

मैज़िनी पर भी उस वक़्त जवानी छाई हुई थी, देश की चिन्ताओं ने अभी दिल को ठंडा नहीं किया था। जवानी की पुरजोश उम्मीदें दिल में लहरें मार रही थीं, मगर उसने संकल्प कर लिया था कि मैं देश और जाति पर अपने को न्यौछावर कर दूंगा। और इस संकल्प पर क़ायम रहा। एक ऐसी सुन्दर युवती के नाजुक–नाजुक होठों से ऐसी दरख़्वास्त सुनकर रद्द कर देना मैज़िनी ही जैसे संकल्प के पक्के हिसाब के पूरे आदमी का काम था।

मैण्डलीन भीगी–भीगी आंखे लिये उठी मगर निराश न हुई थी। इस असफलता ने उसके दिल में प्रेम की आग और भी तेज़ कर दी और आज मैज़िनी को स्विटजरलैण्ड छोड़े कई साल गुज़र गये मगर वफ़ादार मैण्डलीन अभी तक मैज़िनी को नहीं भूली । दिनों के साथ उसकी मुहब्बत और भी गाढ़ी और सच्ची होती जाती है।

मैज़िनी ख़त पढ़ चुका तो एक लम्बी आह भर कर रफ़ेती से बोला– देखा मैण्डलीन क्या कहती है ?

रफ़ेती– उस ग़रीब की जान लेकर दम लोगे !

मैज़िनी फिर ख़याल में डूबा– मैण्डलीन, तू नौजवान, सुन्दर है, भगवान ने तुझे अकूल दौलत दी है, तू क्यों एक ग़रीब, दुखियारे, कंगाल, फक्कड़ परदेश में मारे–मारे फिरने वाले आदमी के पीछे अपनी जिन्दगी मिट्टी मे मिला रही है! मुझ जैसा मायूस, आफ़त का मारा हुआ आदमी तुझे क्योंकर खुश रख सकेगा ?

नहीं, नही मैं ऐसा स्वार्थी नहीं हूं। दुनिया में बहुत में ऐसे हंसमुख खुशहाल नौजवान हैं जो तुझे खुश रख सकते हैं जो तेरी पूजा कर सकते हैं। क्यों तूं उनमें से किसी को अपनी गुलामी में नहीं ले लेती ! मैं तेरे सच्चे, नेक और निःस्वार्थ प्रेम का आदर करता हूं। मगर मेरे लिए, जिसका दिल देश और जाति पर समर्पित हो चुका है, तू एक प्यारी और हमदर्द बहन के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। मुझमें ऐसा क्या खूबी है, ऐसे कौन से गुण हैं कि तुझ जैसी देवी मेरे लिए सो मुसीबतें झेल रही है। आह मैज़िनी, कम्बख्त मैज़िनी, तू कहीं का न हुआ। जिनके लिए तूने अपने को न्योछावर कर दिया, वह तेरी सूरत से नफ़रत करते हैं। जो तेरे हमदर्द हैं, वह समझते हैं तू सपने देख रहा है।

इन ख़्यालों से बेबस होकर मैज़िनी ने क़मल–दावात निकाली और मैण्डलीन को ख़त लिखना शुरू किया ?

4

प्यारी मैण्डलीन,

तुम्हारा ख़त उस अनमोल तोहफ़े के साथ आया। मैं तुम्हारा हृदय से कृतज्ञ हूं कि तुमने मुझ जैसे बेकस और बेबस आदमी को इस भेंट के क़ाबिल समझा। मैं उसकी हमेशा क़द्र करूंगा। यह मेरे पास हमेशा एक सच्चे निःस्वार्थ और अमर प्रेम की स्मृति के रूप में रहेगी और जिस वक़्त यह मिट्टी का शरीर कब्र की गोद में जायेगी मेरी आख़िरी वसीयत यह होगी कि यह यादगार मेरे जनाज़े के साथ दफन कर दी जाय। मैं शायद खुद उस ताकत का अन्दाजा नहीं लगा सकता जो मुझ इस ख़याल से मिलती हैं, दुनिया में जहां चारों तरफ़ मेरे बारे में बदगुमानिया फैल रही हैं, कम से कम एक ऐसी नेक औरत है जो मेरी नियत की सफ़ाई और शायद तुम्हारी हमदर्दी का यक़ीन है कि मैं ज़िंदगी की ऐसी कठिन परीक्षाओं में सफल होता जाता हूं।

मगर प्यारी बहन, मुझे कोई तकलीफ नहीं है। तुम मेरी तकलीफ़ों के ख़्याल से अपना दिल मत दुखना। मैं बहुत आराम से हूं। तुम्हारे प्रेम जैसी अक्षयनिधि पाकर भी अगर मैं कुछ थोड़े से शारीरिक कष्टों का रोना रोऊं तो मुझ जैसा अभागा आदमी दुनिया में कौन होगा।

मैंने सुना है, तुम्हारी सेहत रोज़–ब–रोज़ गिरती ज़ाती है। मेरा जी बेअख्तियार चाहता है कि तुझे देखूं। काश मैं आज़ाद होता, काश मेरा दिल इस क़ाबिल होता कि तुझे भेंट चढ़ा सकता। मगर एक पज–मुर्दा, उदास दिल तेरे क़ाबिल नहीं। मैण्डलीन, खुदा के वास्ते अपनी सेहत का ख़्याल रक्खो, मुझे शायद इससे ज्यादा औ किसी बात की तकलीफ़ न होती कि प्यारी मैण्डलीन तकलीफ़

में है और मेरे लिए ! तेरा पाकीज़ा चेहरा इस वक़्त निगाहों के सामने है। मेगा ! देखो मुझसे नाराज़ न हो । खुदा की क़सम, मैं तुम्हारे क़ाबिल नहीं हूं। आज क्रिसमस का दिन है, तुम्हें क्या तोहफ़ा भेजूं। खुदा तुम पर हमेशा अपनी बेइन्तहा बरकतों का साया रक्खे। अपनी मां को मेरी तरफ़ से सलाम कहना । तुम लोगों को देखने की इच्छा है। देखें कब तक पूरी होती है।

तेरा जोज़ेफ़।

5

इस वाक़ये के बाद बहुत दिन गुज़र गये । जोज़ेफ़ फिर इटली पहुंचा और रोम में पहली बार जनता के राज्य का एलान किया गया । तीन आदमी राज्य की व्यवस्था के लिए निर्वाचन किया गये । मैज़िनी भी उनमें एक था । मगर थोड़े ही दिनों में फ्रांस की ज़्यादातियों और पीडमाण्ट के बादशाह की दग़ाबाज़ियों की बदौलत इस जनता के राज का खात्मा हो गया और उसके कर्मचारी और मन्त्री अपनी जानें लेकर भाग निकले। मैज़िनी अपने विश्वसनीय मित्रों की दग़ाबाज़ी और मौक़ा–परस्ती पर पेचोताब खाता हुआ ख़स्ताहाल और परेशान रोम की गलियों की ख़ाक छानता फिरता था। उसका यह सपना कि रोम को मैं ज़रूर एक दिन जनता के राज का केन्द्र बनाकर छोडूंगा पूरा होकर फिर तितर–बितर हो गया।

दोपहर का वक़्त था, धूप से परेशान होकर वह एक पेड़ की छाया में ज़रा दम लेने के लिए ठहर गया कि सामने से एक लेडी आती हुई दिखाई दी। उसका चेहरा पीला था, कपड़े बिलकुल सफ़ेद और सादा, उम्र तीस साल से ज्यादा। मैज़िनी आत्म–विस्मृति की दशा में था कि यह स्त्री प्रेम से व्यग्र होकर उसके गले लिपट गयी। मैज़िनी ने चौंककर देखा, बोला– प्यारी मैण्डलीन, तुम हो ! यह कहते–कहते उसकी आंखें भीग गयीं। मैण्डलीन ने रोकर कहा– जोज़ेफ़! और मुंह से कुछ न निकला।

दोनों ख़ामोश कई मिनट तक रोते रहे। आख़िर मैज़िनी बोला– तुम यहां कब आयीं, मेगा ?

मैण्डलीन– मैं यही कई महीने से हूं, मगर तुमसे मिलने की कोई सूरत नहीं निकलती थी। तुम्हें काम–काज़ में डूबा हुआ देखकर और यह समझकर कि अब तम्हें मुझ जैसी औरत की हमदर्दी की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही, तुमसे मिलने की कोई जरूरत न देखती थी। (रूककर) क्यों जोज़ेफ़, यह क्या कारण कि अक्सर लोग तुम्हारी बुराई किया करते हैं क्या वह अंधे हैं, क्या भगवान ने उन्हें

आंखें नहीं दीं ?

जोज़ेफ–मेगा, शायद वह लोग सच कहते होंगे। फ़िलहाल मुझमें वह गुण नहीं है जो मैं शान के मारे अक्सर कहा करता हूं कि मुझमें हैं या जिन्हें तुम अपनी सरलता और पवित्राता के कारण मुझमें मौजूद समझती हो। मेरी कमज़ोरियां रोज़–ब–रोज़ मालूम होती जाती है।

मैण्डलीन–अभी तो तुम इस काबिल हो कि मैं तुम्हारी पूजा करूं। मुबारक है वह इन्सान जो खुदी को मिटाकर मुझे भूल जायगी। पहले तो उसके दोस्त इस काम के लिए तैयार न होते थे मगर इस डर से कि कहीं मैण्डलीन ने घुल–घुल कर जान दे दी तो मैज़िनी ज़िन्दगी भर हमें माफ़ न करेगा, उन्होंने यह अप्रिय काम स्वीकार कर लिया था। वह स्विटरजरलैण्ड गये और जहां तक उनकी ज़बान में ताक़त थी, अपने दोस्त की पीठ पीछे बुराई करने में खर्च की। मगर मैण्डलीन पर मुहब्बत का रंग ऐसा गहरा चढ़ा हुआ था, कि इन कोशियों का इसके सिवाय और कोई नतीजा न हो सकता था जो हुआ। वह एक रोज़ बेक़रार होकर घर से निकल खड़ी हुई और रोम में आकर एक सराय में ठहर गयी। यहां उसका रोज़ का नियम था कि मैज़िनी के पीछे–पीछे उसकी निगाह से दूर घूमा करतीं मगर उसे आश्वस्त और अपनी सफ़लता से प्रसन्न देखकर उसे छेड़ने का साहस न करती थी। आख़िरकार जब फिर उस पर अफलताओं का वार हुआ और वह फिर दुनिया में बेकस और बेबस हो गया तो मैण्डलीन ने समझा, अब इसको किसी हमदर्द की जरूरत है । और पाठक देख चुके है जिस तरह वह मैज़िनी से मिली।

6

मैज़िनी रोम से फिर इंगलिस्तान पहुंचा और यहां एक अरसे तक रहा। सन् 1870 में उसे ख़बर मिली कि सिसली कि रिआया बग़ावत पर अमादा है और उन्हें मैदाने जंग में लाने के लिए एक उभारने वाले की ज़रूरत है। बस वह फ़ौरन सिसली पहुंचा मगर उसके जाने के पहले शाही फ़ौज ने बाग़ियों को दबा दिया था। मैज़िनी जहाज़ से उतरते ही गिरफ़्तार करके एक क़ैदखाने में डाल दिया गया। मगर चूंकि अब वह बुड्ढ़ा हो गया था, शाही हुक्काम ने इस डर से कि कहीं वह क़ैद की तकलीफ़ो से मर गया तो जनता को सन्देह होगा कि बादशाह की प्ररेणा से वह क़त्ल कर डाला गया, उसे रिहा कर दिया। निराश और टूटा हुआ दिल लिये मैज़िनी स्विटजरलैण्ड की तरफ रवाना हुआ। उसकी ज़िन्दगी की तमाम उम्मीदें ख़ाक में मिल गयीं। इसमें शक नहीं कि इटली के एकताबद्ध हो

जाने के दिन बहुत पास आ गयें थे मगर उसकी हुकूमत की हालत उससे हरगिज़ बेहतर न थी जैसी आस्ट्रिया या नेपल्पस के शासन काल में। अन्तर यह था कि पहले वह एक दूसरी क़ौम की ज़्यादतियों से परेशान थे, अब अपनी क़ौम के हाथों । इन निरन्तर असफलताओं ने दृढव्रती मैज़िनी के दिल में यह ख़्याल पैदा किया कि शायद जनता कि राजनीतिक शिक्षा इस हद तक नहीं हुई, कि वह अपने लिए एक प्रजातांत्रिाक शासन–व्यवस्था की बुनियाद डाल सके और इसी नियत से वह स्विटज़रलैण्ड जा रहा था कि वहां से एक ज़बर्दस्त क़ौमी अख़बार निकाले क्योंकि इटली में उसे अपने विचारों को फैलाने की इजाज़त न थी । वह रात भर नाम बदल कर रोम में ठहरा । फिर वहां से अपनी जन्मभूमि जिनेवा में आया और अपनी नेक मां की क़ब्र पर फूल चढ़ाये। इसके बाद स्विटज़रलैण्ड की तरफ़ चला और साल भर तक कुछ विश्वसनीय मित्रों की सहायता से अख़बार निकालता रहा। मगर निरन्तर चिन्ता और कष्टों ने उसे बिलकुल कमज़ोर कर दिया था। सन् 1870 में वह सेहत के ख़्याल से इंगलिस्तान आ रहा था कि आल्प्स पर्वत की तलहटी में निमोनिया की बीमारी ने उसके जीवन का अन्त कर दिया और वह एक अरमानों से भरा हुआ दिल लिये स्वर्ग को सिधरा। इटली का नाम मरते दम तक उसी जबान पर था। यहां भी उसके बहुत से समर्थक और हमदर्द शरीक थे। उसका जनाज़ा बड़ी धुम से निकला। हज़ारों आदमी साथ थे और एक बड़ी सुहानी खुली हुई जगह पर पानी के एक साफ़ चश्मे के किनारे पर क़ौम के लिए मर मिटने वाले को सुला दिया गया ।

7

मैज़िनी को कब्र में सोये हए आज तीन दिन गुजर गये । शाम का वक़्त था, सूरज की पीली किरणें इस ताज़ा क़ब्र पर हसतरभरी आंखों से ताक रहीं है। तभी एक अध्ेड़ खूबसूरत औरत, सुहाग के जोड़े पहने, लड़खती हुई आती। यह मैण्डलीन थी। उसका चेहरा शोक में डूबा हुआ था, बिल्कुल मुर्झाया हुआ, कि जैसे अब इस शरीर में जान बाक़ी नहीं रही। वह इस क़ब्र के सिराहने बैठ गयी और अपने सीने पर खुंसे हुए फूल उस पर चढ़ाये, फिर घुटनों के बल बैठकर सच्चे दिल से दुआ करती रही। जब खूब अंधेरा हो गया, बर्फ पड़ने लगी तो वह चुपके से उठी और ख़ामोश सर झुकाये क़रीब के एक गांव में जाकर रात बसर की और भोर की बेला में अपने मकान की तरफ़ रवाना हुई

मैण्डलीन अब अपने घर की मालिक थी। उसकी मां बहुत ज़माना हुआ, मर चुकी। उसने मैज़िनी के नाम से एक आश्रम बनवाया और खुद आश्रम की

ईसाई लॉडियों के लिबास मे वहा रहने लगी। मैज़िनी का नाम उसके लिए एक निहायत पुरदर्द और दिलकश गीत से कम न था। हम–दर्दो और क़द्रदानों के लिए उसका घर उनका अपना घर था। मैज़िनी के ख़त उसकी इंजील और मैज़िनी का नाम उसका ईश्वर का था। आस–पास के ग़रीब लड़कों और मुफ़लिस बीवीयों के लिए यही बरकत से भरा हुआ नाम जीविका का साधन था। मैण्डलीन तीन बरस तक जिन्दा रही और जब मरी तो अपनी आखिरी वसीयत के मुताबिक उसी आश्रम में दफ़न की गयी। उसका प्रेम मामूली प्रेम न था, एक पवित्र और निष्कंलक भाव था और वह हमको उन प्रेम–रस में डूबी हुई गोपियों की याद दिलाता है जो श्रीकृष्ण के प्रेम वृन्दावन की कुंजों और गलियों में मंडलाया करती थीं, जो उससे मिले होने पर भी उससे अलग थीं और जिनके दिलों में प्रेम के सिवा और किसी चीज की जगह न थी। मैज़िनी का आश्रम आज तक क़ायम है और ग़रीब और साधु–सन्त अभी तक मैज़िनी का पवित्र नाम लेकर वहां हर तरह का सुख पाते है ।

❑ ❑

हमारे प्रकाशन

1.**सोज़े वतन**–मुंशी प्रेमचन्द	22.00
2.**धूल मैं लट्ठ** (हरियाणवी हास्य)–योगेन्द्र मौदगिल	30.00
3.**हरियाणा की लोककथाए** –सुरेश जांगिड़ उदय	22.00
4.**हरियाणवी के रंग–तरंग** –सुरेश जांगिड़ उदय	22.00
5.**कतरे में समन्दर** (ग़ज़ल संग्रह)–गुलशन मदान	80.00
8.**हास्यमेव जायते** (हास्य कविताएं) –योगेन्द्र मौदगिल	40.00
6.**भारतीय संविधान** –सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
7.**मंज़र मंज़र अंगारे** (ग़ज़ल संग्रह)–योगेन्द्र मौदगिल	40.00
8.**सहमा हुआ समय** (कविता संग्रह)–कमलेश शर्मा	50.00
9.**यहीं कहीं** (लघुकथा संग्रह)–सुरेश जांगिड़ उदय	10.00
10. **प्रेमचन्द का लघुकथा साहित्य**–सं.–सुरेश जांगिड़ उदय	25.00
11.गुलशन मदान ग़ज़ल के आईने में(शोध प्रबंध)–तेजिन्द्र	120.00
12.**ओशो के संग**–स्वामी आनंद अकीन	30.00
13.**बाट मत जोहना** (कहानी संग्रह)–सुरेश जांगिड़ उदय	25.00
14.**हारे हुए चेहरे** (कहानी संग्रह)–मनोज कुमार प्रीत	15.00
15.**अमरवाणी** –सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
16.पं. लख्मीचंद के उपदेशक भजन सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
17.पं. मांगेराम जीवनी एवं सांग सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00

सुकीर्ति प्रकाशन
डी. सी. निवास के सामने, करनाल रोड़,
कैथल.136027 (हरियाणा)